'नवोन्मेष'

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक

हिंदी 'अ' पाठ्यक्रम आधारित संदर्शिका

2018

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

वरुण मार्ग, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
2018

3,100 प्रतियाँ

प्रकाशन अधिकारी

मुकेश यादव

प्रकाशन मंडल

नवीन कुमार, राधा, जय भगवान

प्रकाशक : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली–110024

मुद्रक : STAR FORMS

मुख्य सलाहकार

डॉ. सुनीता कौशिक

निदेशक राज्य शैखिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

मार्ग दर्शन

डॉ. नाहर सिंह

संयुक्त निदेशक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

शैक्षिक समन्वयक एवं सम्पादक

डॉ. कुमुद भारद्वाज

मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम, नई दिल्ली

लेखक समूह

1. डॉ. राकेश सिंह, उप–प्रधानाचार्य (से॰नि॰) शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार, दिल्ली
2. डॉ. लोकेश देव शर्मा, प्रवक्ता (हिंदी), रा॰प्र॰वि॰वि॰, बी ब्लॉक, यमुना विहार, दिल्ली
3. बृजेश बहादुर सिंह, प्रवक्ता (हिंदी), राजकीय उच्चतर बाल विद्यालय ब्रह्मपुरी, दिल्ली–53
4. अभिषेक चंद्र श्रीवास्तव, स्नातक शिक्षक (हिंदी), रा॰स॰बा॰ विद्यालय, ई ब्लॉक, नंद नगरी, दिल्ली
5. डॉ. अंकित कुमार श्रीवास्तव, स्नातक शिक्षक (हिंदी)

   कोर अकादमिक यूनिट, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार, दिल्ली

आमुख

शिक्षा व्यापक स्तर पर लोगों को सशक्त करने का प्रमुख माध्यम है। वर्तमान परिवेश में सरकार का मुख्य ध्यान आम आदमी को सशक्त करते हुए जीवन के बुनियादी कौशलों का विकास करना है, ताकि भारत के लोकतंत्र को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके, राष्ट्र निर्माताओं के सपनों को साकार किया जा सके। इस दिशा में शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भारत के लोकतांत्रिक और सामाजिक उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है।

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की चुनौतियाँ और बढ़ जाती हैं। इस स्तर पर छात्र सामाजिक जीवन के यथार्थ से रू–ब–रू होते हैं और अधिगम प्राप्त करने का दायित्व भी उन पर बढ़ जाता है। इन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें यह सुनिश्चित करना है कि हम उनके लिए अधिगम को रूचि–पूर्ण तथा उपयोगी बनाएं। अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए ही सरकार ने मिशन चुनौती तथा मिशन बुनियाद जैसे सफल कार्यक्रमों की नींव डाली है। इस प्रकार के मिशन विद्यार्थियों की लिखने–पढ़ने में मदद भर ही नहीं करते बल्कि उन्हें अगली कक्षाओं में पठन–पाठन के प्रति एक आत्मविश्वास भी पैदा करते हैं।

अतः हमारा दायित्व है कि हमारे विद्यार्थी न केवल अच्छे अंक प्राप्त करें बल्कि अपने कौशलों का विकास कर, उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश पा सकें तथा साथ ही राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा स्थापित कर पाएं।

दिल्ली में कार्यरत राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद तथा मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा समय–समय पर तैयार की गई शिक्षक संदर्शिकाएँ व अन्य सहायक सामग्री इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक प्रयास हैं। प्रस्तुत शिक्षक संदर्शिका सामान्यतया अध्यापकों की आवश्यकता के अनुरूप तथा पाठ्यक्रम के कठिन बिंदुओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इस संदर्शिका में क्रियाकलाप आधारित अधिगम प्रक्रिया एवं कार्य–प्रपत्रों का समावेश किया गया है जो शिक्षण को सरल और रुचिकर बनाती है। अध्यापकों से भी ऐसी ही आशा की जाती है कि प्रस्तुत शिक्षण सामग्री का अनुसरण करते हुए अधिगम प्रक्रिया को सरल व रूचिकर बनाने के लिए विद्यार्थियों की रूचि, स्तर एवं संसाधनों के अनुरूप विवेकपूर्ण क्रियाकलापों, गतिविधियों और आधुनिक तकनीकों का प्रयोग एवं निर्माण करेंगे। इन शिक्षण संदर्शिकाओं का एक उद्देश्य यह भी है कि शिक्षण – अधिगम को रोचक

एवं अंतः क्रियात्मक बनाते हुए छात्रों की पाठयपुस्तक पर निर्भरता कम की जा सके।

प्रस्तुत संदर्शिका अध्यापकों को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के मूल्यांकन प्रक्रिया से अवगत कराते हुए वैकल्पिक बिंदुओं का भी सुझाव देती है।

विगत कुछ वर्षों में दिल्ली के विद्यालयों में गुणात्मक सुधार हुए हैं। जिसके लिए समय–समय पर तैयार की गई शिक्षण सामग्री, अन्तः सेवा शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ–साथ शिक्षकों का अथक परिश्रम भी सम्मिलित है। परिणामस्वरूप अपेक्षित परिणाम भी लगातार प्राप्त हुए हैं। मैं इसके लिए इस प्रक्रिया से जुड़े सभी सदस्यों के प्रति साधुवाद व्यक्त करती हूँ तथा भविष्य में और अधिक गुणात्मक सुधार का न केवल कामना करती हूँ अपितु अपेक्षा करती हूँ।

मैं उन सभी विषय–विशेषज्ञों, लेखक समूह व समन्वयकों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचारों को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया। साथ ही मैं सभी राज्य शैक्षिक व अनुसंधान परिषद तथा मंडलीय शिक्षा व प्रशिक्षण संस्थानों के शैक्षणिक व गैर–शैक्षणिक पदाधिकारियों व प्रकाशन विभाग के अमूल्य योगदान की सराहना करती हूँ।

निदेशक

(डॉ. सुनीता एस. कौशिक)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं परिषद, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

1. **कक्षा नवीं एवं दसवीं हिंदी 'अ' पाठ्यक्रम एवं ब्लू–प्रिंट**
2. **कक्षा नवीं**
   - **2.1** ल्हासा की ओर – राहुल सांकृत्यायन
   - **2.2** सांवले सपनों की याद – ज़ाबिर हुसैन
   - **2.3** मेरे बचपन के दिल – महादेवी वर्मा
   - **2.4** वाख – ललद्यद
   - **2.5** चंदग्रहना से लौटती बेर – केदारनाथ अग्रवाल
   - **2.6** मेरे संग की औरतें – मृदुला गर्ग
   - **2.7** समास
   - **2.8** वाक्य–भेद (अर्थ के आधार पर)
   - **2.9** अलंकार
   - **2.10** संवाद–लेखन
3. **कक्षा दसवीं**
   - **3.1** राम–लक्ष्मण – परशुराम संवाद – तुलसीदास
   - **3.2** छाया मत छूना – गिरिजा कुमार माथुर
   - **3.3** संगतकार – मंगलेश डबराल
   - **3.4** लखनवी अंदाज – यशपाल
   - **3.5** एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी
   - **3.6** जॉर्ज पंचम की नाक – कमलेश्वर
   - **3.7** वाक्य भेद – (रचना के आधार पर)
   - **3.8** पद – परिचय
   - **3.9** रस
   - **3.10** विज्ञापन लेखन

हिंदी मातृभाषा (कोड 002)
कक्षा 9वीं-10वीं (2018-19)

कक्षा 9वीं व 10वीं में मातृभाषा के रूप में हिंदी–शिक्षण के उद्‌देश्य :

- कक्षा आठवीं तक अर्जित भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) का उत्तरोत्तर विकास।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास।
- स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- किसी चित्र का वर्णन (चित्र व्यक्ति या स्थान के हो सकते हैं)
- किसी निर्धारित विषय पर बोलना जिससे वह अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सके।
- परिचय देना।

  (स्व/परिवार/वातावरण/वस्तु/व्यक्ति/पर्यावरण/कवि/लेखक आदि)

शिक्षण – निर्देश –

माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापक की भूमिका उचित वातावरण के निर्माण में सहायक की होनी चाहिए। भाषा और साहित्य की पढ़ाई में इस बात पर ध्यान देने की जरूरत होगी कि –

- विद्‌यार्थी द्वारा की जा रही गलतियों को भाषा के विकास के अनिवार्य चरण के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अबाध रूप से बिना झिझक के लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करने में उत्साह का अनुभव करें। विद्यार्थियों पर शुद्धि का ऐसा दबाव नहीं होना चाहिए कि वे तनावग्रस्त माहौल में पड़ जाएं। उन्हें भाषा के सहज, कारगर और रचनात्मक रूपों से इस तरह परिचित कराना उचित है कि वे स्वयं सहजरूप से भाषा का सृजन कर सकें।
- गलत से सही दिशा की ओर पहुंचने का प्रयास हो। विद्यार्थी स्वतंत्र और अबाध रूप से लिखित

और मौखिक अभिव्यक्ति करे। अगर कहीं भूल होती है तो अध्यापक को अपनी अध्यापन शैली में परिवर्तन की आवश्यकता होगी।

- ऐसे शिक्षण–बिंदुओं की पहचान की जाए जिससे कक्षा में विद्यार्थी निरंतर सक्रिय भागीदारी करें और अध्यापक भी इस प्रक्रिया में उनका साथी बने।
- हर भाषा का अपना एक नियम और व्याकरण होता है। भाषा की इस प्रकृति की पहचान कराने में परिवेशगत और पाठगत संदर्भों का ही प्रयोग करना चाहिए। यह पूरी प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी स्वयं को शोधकर्ता समझे तथा अध्यापक इसमें केवल निर्देशन करें।
- हिंदी में क्षेत्रीय प्रयोगों, अन्य भाषाओं के प्रयोगों के उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है कि भाषा अलगाव में नहीं बनती और उसका परिवेश अनिवार्य रूप से बहुभाषिक होता है।
- भिन्न क्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण–सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हें अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।
- कक्षा में अध्यापक को हर प्रकार की विभिन्नताओं (लिंग, जाति, वर्ग, धर्म आदि) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशली वातावरण निर्मित करना चाहिए।
- परंपरा से चले आ रहे मुहावरों, कहावतों (जैसे रानी रूठेंगी तो अपना सुहाग लेंगी) आदि के जरिए विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों की समझ पैदा करना चाहिए और उनके प्रयोग के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना चाहिए।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो–वीडियो कैसेट तैयार किए जाएं। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन–शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग–अलग छटा दिखाई जा सकती है।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर होगा कि शिक्षक के हाथ में तरह–तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देखें और कक्षा में अलग–अलग मौकों पर शिक्षक उनका इस्तेमाल करें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इनके इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान

के आधार पर निकटतम अर्थ तक वहुंख्का संतुष्ट होने की जगह वे अधिकतम अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जाएंगे। इससे शब्दों की अलग–अलग रंगत का पता चलेगा, वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएंगे।

व्याकरण बिंदु

कक्षा 9वीं

- उपसर्ग, प्रत्यय
- समास
- अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद
- अलंकार : शब्दालंकार – अनुप्रास, यमक एवं श्लेष, अर्थालंकार – उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति एवं मानवीकरण

कक्षा 10वीं

- रचना के आधार पर वाक्य भेद
- वाच्य
- पद–परिचय
- रस

श्रवण (सुनना) का परीक्षण :

- परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 150 शब्दों का होना चाहिए।

  या

  परीक्षक 2–3 मिनट का श्रव्य अंश (ऑडियो क्लिप) सुनवाएगा। अंश रोचक होना चाहिए। कथ्य/घटना पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। वाचक का उच्चारण, शुद्ध, स्पष्ट एवं विराम चिह्नों के उचित प्रयोग सहित होना चाहिए।
- परीक्षक को सुनते–सुनते परीक्षार्थी अलग कागज पर दिए हुए श्रवण बोधन के अभ्यासों को हल कर सकेंगे।
- अभ्यास रिक्त स्थान की पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य/असत्य का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं।

- अति लघुत्तरात्मक 5 प्रश्न पूछे जाएंगे।

लिखने की योग्यताएं

- लिपि के मान्य रूप का ही व्यवहार करना।
- विराम–चिह्नों को सही प्रयोग करना।
- लेखन के लिए सक्रिय (व्यवहारोपयोगी) शब्द भंडार की वृद्धि करना।
- प्रभावपूर्ण भाषा तथा लेखन–शैली का स्वाभाविक रूप से प्रयोग करना।
- उपयुक्त अनुच्छेदों में बांटकर लिखना।
- प्रार्थना पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, संवेदना पत्र, आदेश पत्र, एस.एम.एस. आदि लिखना और विविध प्रपत्रों को भरना।
- विविध स्त्रोतों से आवश्यक सामग्री एकत्र कर अभीष्ट विषय पर निबंध लिखना।
- देखी हुई घटनाओं का वर्णन करना और उन पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करना।
- पढ़ी हुई कहानी को संवाद में तथा संवाद को कहानी में परिवर्तित करना।
- समारोह और गोष्ठियों की सूचना और प्रतिवेदन तैयार करना।
- सार, संक्षेपीकरण एवं भावार्थ लिखना।
- गद्य तथा पद्य अवतरणों की व्याख्या लिखना।
- स्वानुभूत विचारों और भावनाओं को स्पष्ट सहज और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करना।
- क्रमबद्धता और प्रकरण की एकता बनाए रखना।
- लिखने में मौलिकता और सर्जनात्मकता लाना।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

- वाद–विवाद

  विषय का चुनाव विषय–शिक्षक स्वयं करे।

  आधार बिंदु – तार्किकता, भाषण कला, अपनी बात अधिकारपूर्वक कहना।

- कवि सम्मेलन

  पाठ्यपुस्तक में संकलित कविताओं के आधार पर कविता पाठ

  या

  मौलिक कविताओं की रचना कर कवि सम्मेलन या अंत्याक्षरी

आधार बिंदु

- ✏ अभिव्यक्ति
- ✏ गति, लय, आरोह–अवरोह सहित कविता वाचन
- ✏ मंच पर बोलने का अभ्यास/या मंच भय से मुक्ति

मूल्यांकन के संकेत बिंदुओं का विवरण

प्रस्तुतीकरण

- आत्मविश्वास
- हाव–भाव
- प्रभावशीलता
- तार्किकता
- स्पष्टता

विषय वस्तु

- विषय की सही अवधारण
- तर्क सम्मत

भाषा

- शब्द चयन व स्पष्टता स्तर और अवसर के अनुकूल

उच्चारण

- स्पष्ट उच्चारण, सही अनुतान, आरोह–अवरोह पर अधिक बल।

हिंदी पाठ्यक्रम – अ (कोड सं. – 002)

कक्षा 9वीं हिंदी अ – संकलित परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2018–19

परीक्षा भार विभाजन					
	विषयवस्तु			उपभार	कुल भार
1	पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न				15
	अ	एक अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x2=2) (2x3=6)		8	
	ब	एक अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x3=3) (2x2=4)		7	
2	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न (1x15)				15
	व्याकरण				
	1	शब्द निर्माण उपसर्ग – 2 अंक, प्रत्यय – 2 अंक, समास – 3 अंक		7	
	2	अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद – 4 अंक		4	
	3	अलंकार – 4 अंक (शब्दालंकार अनुप्रास, यमक, श्लेष) (अर्थालंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण)		4	
3	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 1 व पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग–1				30
	अ	गद्य खंड		13	
		1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि प्रश्न (2+2+1)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन व मनन क्षमताओं का आकलन करने हेतु प्रश्न (2x4)	8	

	ब	काव्य खंड		13	
		1	काव्य बोध व काव्य पर स्वयं की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न (2+2+1)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न (2x4)	8	
	स	पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 1		4	
			पूरक पुस्तिका कृतिका के निर्धारित पाठों पर आधारित एक प्रश्न पूछा जाएगा (विकल्प सहित)। इस प्रश्न का कुल भार चार अंक होगा। (4x1)	4	
4	लेखन				20
	अ	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध। (10x1)		10	
	ब	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र (5x1)		5	
	स	किसी एक विषय पर संवाद लेखन (5x1)		5	
		कुल			80

नोट : निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

क्षितिज (भाग – 1)	उपभोक्तावाद की संस्कृति एक कुत्ता और एक मैना साखियाँ व सबद पाठ से सबद – 2 संतों भाई आई.... ग्राम श्री
कृतिका (भाग – 1)	इस जल प्रलय में किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया

हिंदी पाठ्यक्रम – अ (कोड सं. 002)

कक्षा 10वीं हिंदी – अ परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2018 – 19

परीक्षा भार विभाजन					
	विषय वस्तु			उप भार	कुलभार
1	पाठ्य कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न				15
	अ	एक अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x2=2) (2x3=6)		8	
	ब	एक अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x3=3) (2x2=4)		7	
2	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न				
	व्याकरण				15
	1	रचना के आधार पर वाक्य भेद (3 अंक)		3	
	2	वाच्य (4 अंक)		4	
	3	पद परिचय (4 अंक)		4	
	4	रस (4 अंक)		4	
3	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 2 व पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग–2				30
	अ	गद्य खंड		13	
		1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न (2+2+1)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन व मनन क्षमताओं का आकलन करने हेतु प्रश्न (2x4)	8	
	ब	काव्य खंड		13	
		1	काव्यबोध व काव्य पर स्वयं की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न (2+2+1)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न (2x4)	8	

	स	पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 2	4	
		पूरक पुस्तिका कृतिका के निर्धारित पाठों पर आधारित एक प्रश्न पूछा जाएगा (विकल्प सहित)। इस प्रश्न का कुल भार चार अंक का होगा। (4x1)	4	
4	लेखन			20
	अ	विभिन्न विषयों और संदर्भो पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध। (10x1)	10	
	ब	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र। (5x1)	5	
	स	विषय से संबंधित 25–50 शब्दों के अंतर्ग विज्ञापन लेखन। (5x1)	5	
		कुल		**80**

नोट : निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

क्षितिज (भाग – 2)	देव जयशंकर प्रसाद – आत्मकथ्य स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन संस्कृति
कृतिका (भाग – 2)	एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! मैं क्यों लिखता हूँ?

प्रश्नपत्र का प्रश्नानुसार विश्लेषण एवं प्रारूप
हिंदी पाठ्यक्रम – अ
कक्षा – 9वीं एवं 10वीं

निर्धारित समयावधि : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

क्र सं.	प्रश्नों का प्रारूप	दक्षता परीक्षपण / अधिगम परिणाम	अति लघु. 1 अंक	लघु. 2 अंक	निबंधा–त्मक–1 4 अंक	निबंधा–त्मक–2 5 अंक	निबंधा–त्मक–3 10 अंक	कुल योग
क	अपठित बोध	अवधारणात्मक बोध, अर्थग्रहण, अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, शब्दज्ञान व भाषिक कौशल	05	05				15
ख	व्यावहारिक व्याकरण	व्याकरणिक संरचनाओं का बोध और प्रयोग, विश्लेषण एवं भाषिक कौशल	15					15
ग	पाठ्य पुस्तक	प्रत्यास्मरण, अर्थग्रहण (भावग्रहण) लेखक के मनोभावों को समझना, शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ समझना, आलोचनात्मक चिंतन, तार्किकता, सराहना, साहित्यिक परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन, विश्लेषण, सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता, कार्य–कारण संबंध स्थापित करना, साम्यता एवं अंतरों की पहचान, अभिव्यक्ति में मौलिकता एवं जीवन मूल्यों की पहचान	02	12	01			30

घ	रचनात्मक लेखन (लेखन कौशल)	संकेत बिंदओं का विस्तार, अपने मत की अभिव्यक्ति, सोदाहरण समझाना, औचित्य निर्धारण, भाषा में प्रवाहमयता, सटीक शैली, उचित प्रारूप का प्रयोग, अभिव्यक्ति की मौलिकता, सृजनात्मका एवं तार्किकता				02	01	20
		कुल	1X22 =22	2X17 =34	4X1 =4	5X2 =10	10X1 =10	80

साभार – सी.बी.एस.ई प्रपत्र

web : cbseacademic.nic.in

ल्हासा की ओर

(राहुल सांकृत्यायन)

पाठ परिचय –

प्रस्तुत पाठ यात्रा–वृतांत विधा में रचित राहुल सांकृत्यायन की 'प्रथम तिब्बत यात्रा' से अवतरित है। घुम्मक्कड़ी साहित्य के जनक राहुल सांकृत्यायन ने अपना साहित्य अत्यंत सरल भाषा और रोचक शैली में लिखा है। इनके साहित्य में विवरणात्मकता, कल्पनाशीलता तथा रोचकता के साथ स्वयं का व्यक्तित्व भी उपस्थित होता है। प्रस्तुत पाठ 'ल्हासा की ओर' में लेखक के द्वारा 1929–30 में नेपाल के रास्ते तिब्बत की ओर की यात्रा का विवरण दिया गया है। लेखक इस पाठ में विभिन्न स्थानों के रोचक भौगोलिक वर्णन के साथ वहाँ के जन–जीवन की झांकी स्थानीय शब्दों के साथ सरलता से प्रस्तुत करते हैं। विशेष रूप से तिब्बती समाज की विशेषताओं का वर्णन और विश्लेषण सहजता के साथ करते हैं।

पाठ को बोधगम्य बनाने हेतु शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण तथ्य, चरित्र और घटनाओं से संबंधित कुछ निर्देशित बिंदु –

1. यह यात्रा राहुल सांकृत्यायन ने 1929–30 में नेपाल के रास्ते की थी। उस समय भारतीयों को तिब्बत यात्रा करने की अनुमति नहीं थी, इसलिए उन्होंने यह यात्रा एक भिखमंगे के छद्म वेश में की थी।

2. जिस रास्ते से लेखक ने यात्रा की वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य मार्ग था। यह एक सैनिक रास्ता भी था तथा हिंदुस्तान की वस्तुएं भी इसी रास्ते से तिब्बत जाया करती थी।

3. तिब्बती समाज में जाति–पाँति, छुआछूत आदि का सवाल ही नहीं था और न ही औरतें परदा करती थी। वहाँ कोई भी अजनबी किसी के घर में जा सकता था और घर की स्त्रियों को चाय बनाने का सामान देकर चाय बनाने के लिए कह सकता था। वहाँ की चाय नमक–मक्खन डालकर बनती थी।

4. चिटें एक प्रकार की मजिस्ट्रेट द्वारा राहदारी (अनुमति पत्र) होती थी, जोकि वहाँ आगे प्रवेश करने के लिए आवश्यक होती थीं।

5. पांच वर्ष बाद जब लेखक भद्र वेश में आया तो उसे रूकने की जगह नहीं मिली। इसका कारण था कि जब लेखक वहाँ पहुँचा तो शाम हो चुकी थी और स्थानीय लोग छङग पीकर अपने होश–हवाश खो बैठे थे। उन्हें भद्र और भिखमंगे में कोई अंतर नजर नहीं आता था।

6. वहाँ हथियार का कानून न रहने के कारण लोग लाठी की तरह पिस्तौल, बंदूक लिए फिरते हैं।

7. सुमति लेखक को मार्ग दिखाने वाला साथी गाइड था। वह एक मंगोल भिक्षु था जो कि बोधगया से लाए गए गंडो (मंत्र पढ़कर गांठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा) को स्थानीय लोगों में बांटा करता था। उसका असली नाम लोब्जङ शेख था।

8. तिब्बत में धूप बहुत तेज पड़ती है। यदि आप सूरज की ओर मुंह करके चल रहें है तो आपका माथा बहुत गर्म एवं पीछे का कंधा बर्फ होता है।

9. तिब्बत की जमीन छोटे–बड़े जागीरदारों में बंटी हुई है। इन जागीरों का बहुत अधिक भाग मठों अर्थात विहारों के हाथ में है। प्रत्येक जागीरदार कुछ खेती स्वयं भी करता है। इस खेती के प्रबंध को नियुक्त किए जाने वाले भिक्षु की स्थिति एक राजा की तरह होती है।

10. कन्जुर का अर्थ है – बुद्ध के वचनों का संग्रह। लेखक को शेकर विहार के मंदिर में कन्जुर की हाथ से लिखित 103 पोथियाँ प्राप्त हुई। जिसके अध्ययन में लेखक रम गया और सुमति के उसी दिन वापस आने पर लेखक और सुमति ने अपना सामान उठाया और मंदिर के मुखिया भिक्षु से विदा लेकर आगे की ओर चल पड़े।

महत्वपूर्ण गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहां जाति–पाति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती है। बहुत निम्न श्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते, नहीं तो आप बिल्कुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिल्कुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं।

प्रश्न –

1. प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम बताइए ?
2. तिब्बती समाज में कौन सी कुरीतियां नहीं हैं?
3. लोग निम्न श्रेणी के भिखमंगों को घर के भीतर क्यों नहीं आने देते ?

4. अपरिचित लोगों का भी घर में प्रवेश तिब्बती समाज की किस विशेषता को दर्शाता है?
5. 'जाति–पाति' में कौन सा समास है?

(अध्यापक इसी प्रकार पाठ से संबंधित प्रमुख गद्यांशों का अभ्यास विद्यार्थियों से करवाएं)

गतिविधियां / क्रियाकलाप –

पाठ को रूचिकर एवं बोधगम्य बनाने के लिए अनेक प्रकार के क्रियाकलाप व्यक्तिगत, युग्म अथवा समूह में करवाए जा सकते हैं। यहां उदाहरण के लिए कुछ गतिविधियां दी जा रही है। इनके अतिरिक्त अध्यापक छात्रों की रूचि स्तर उपलब्ध साधनों आदि को देखते हुए अन्य गतिविधियों का भी निर्माण कर सकते हैं। पाठ को सुरूचिकर बनाने में दृश्य–श्रव्य माध्यमों का भी उपयोग किया जा सकता है।

गतिविधि –

1. किसी भी स्थानीय भाषा के शब्दों को आंचलिक शब्द कहते हैं। इस पाठ में आए ऐसे ही आंचलिक शब्दों की सूची बनाइए। (व्यक्तिगत)
2. अपनी किसी भी यात्रा से जुड़े अनुभवों के बारे में 100 शब्द में एक अनुच्छेद लिखें – (व्यक्तिगत)
3. पाठ के आधार पर आप उस समय के भारतीय समाज की विशेषताएं लिखिए एवं आपका साथी उस समय के तिब्बती समाज की विशेषताएं लिखेगा। (युग्म)
4. पाठ के आधार पर आप तिब्बत में चाय बनाने की आवश्यक सामग्री और विधि लिखिए तथा आपका साथी भारत में सामान्यतः चाय बनाने की सामग्री और विधि लिखेगा। (युग्म)
5. पाठ में आए तिब्बती स्थानों और नामों का उच्चारण कीजिए। (व्यक्तिगत)
6. कक्षा को 5 छात्रों के समूह में बांटकर प्रत्येक समूह को निम्न बिंदुओं पर आधारित विशेषताओं को लिखने के लिए कहा जा सकता है। (समूह)

   क) वेशभूषा ख) आंचलिक शब्द ग) लेखक / सुमति आदि के चरित्र की विशेषताएं
   घ) खान–पान / रहन–सहन ङ) भौगोलिक विवरण च) तत्कालीन शासन व्यवस्था
7. प्रत्येक समूह को पाठ में आए स्थानों को मानचित्र में अंकित करने हेतु कहा जा सकता है।

आकलन –

(पाठ को विद्यार्थियों ने स्पष्ट रूप से समझा या नहीं इसका आंकलन करने हेतु प्रत्येक विद्यार्थी से निम्न प्रकार के प्रश्न पूछकर उन्हें चिह्नित करें कि उन्हें पाठ समझ में आ गया)

1. प्रस्तुत पाठ के लेखक कौन हैं?
2. इस पाठ को लेखक की कौन सी पुस्तक से लिया गया है?
3. इस पाठ की विधा कौन सी है?
4. नेपाल से तिब्बत जाने की रास्ते की प्रमुख विशेषताएं क्या थीं?
5. लेखक चाय पीने के लिए कहाँ ठहरा?
6. लेखक के साथी का नाम क्या था?
7. सुमति अपने यजमानों के पास क्या करने जाता था?
8. तिब्बती समाज में कौन सी कुरीतियां नहीं थी?
9. लेखक पहले किस वेश में गया? तथा अगली बार किस वेश में गया ?
10. भिखारी के वेश में लेखक को रहने का स्थान मिला किंतु 5 वर्ष बाद जब वह भद्र वेश में गया तो उसे रहने का स्थान क्यों नहीं मिला?
11. तिब्बत में चाय बनाने की विधि बताइए।
12. लेखक ने चिटें एक आदमी को क्यों दे दीं?
13. डांड़ा क्या होते थे?
14. तिब्बत में डकैत सबसे पहले क्या करते थे और ऐसा क्यों करते थे?
15. वहां लोग लाठी की तरह पिस्तौल, बंदूक लिए क्यों फिरते हैं?
16. लेखक को भारवाहक की आवश्यकता क्यों महसूस हुई?
17. लङकोर जाते समय लेखक अपने साथी से क्यों पिछड़ गया?
18. 'दोन्किवक्स्तो' कौन था?
19. सुमति गुस्से में क्यों था?

20. लङकोर में उन्होंने क्या खाया?

21. तिङरी के विशाल मैदान में छोटी सी पहाड़ी का क्या नाम था?

22. सुमति बोधगया से लाए कपड़ों के गंडे खत्म हो जाने पर कपड़ों से नए गंडे बना लेता था? ऐसा क्यों?

23. तिब्बत के ज़मीनों की क्या विशेषताएं हैं?

24. कन्जुर क्या होते हैं? प्रत्येक पोथी का वजन कितना था?

25. लेखक ने सुमति को यजमानों के पास क्यों भेजा?

कार्य प्रपत्र

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ रिक्त स्थान में लिखिए –

	शब्द	अर्थ
क)	गंडे	....
ख)	यजमान	....
ग)	भीटा	....
घ)	कंडे	....
ङ)	सत्तू	....
च)	थुक्पा	....
छ)	भरिया	....
ज)	परिव्यक्त	....
झ)	राहदारी	....
ञ)	छंङ	....
ट)	कन्जुर	....
ठ)	जागीरदार	....

2. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग–प्रत्यय छांटिए –

	शब्द	उपसर्ग / प्रत्यय
क)	व्यापारिक	.... (प्रत्यय)
ख)	परिव्यक्त	.... (उपसर्ग)
ग)	राहदारी	.... (प्रत्यय)
घ)	सुमति	.... (उपसर्ग)
ङ)	भरिया	.... (प्रत्यय)
च)	उतराई	.... (प्रत्यय)
छ)	अपरिचित	.... (उपसर्ग)

अधिगम प्रतिफल

1. विद्यार्थी यात्रा–वृत्तांत विधा के बारे में बताते हैं।
2. तिब्बत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की विशेषताओं की अभिव्यक्ति करते हैं।
3. तिब्बत की भोगौलिक परिस्थितियों के बारे में जानते हैं।
4. भारतीय समाज और तिब्बती समाज की तुलना करते हैं।
5. तिब्बती शब्दावलियों के बारे में जानते हैं।

मेरे बचपन के दिन

पाठ परिचय –

प्रस्तुत पाठ में महादेवी वर्मा जी ने अपने बचपन के उन दिनों की स्मृति के सहारे लिखा है जब वे विद्यालय में पढ़ रही थी। इस संस्मरण में उन्होंने लड़कियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, अपनी सहपाठियों, छात्रावास के जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसंगों का बहुत ही सजीव वर्णन किया है।

लेखिका अपने बचपन के दिनों को याद कर कहती है कि वे परिवार में पहली लड़की पैदा हुई थी, क्योंकि पहले लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था। घर में हिंदी का वातावरण न होने पर भी उनकी माँ ने उन्हें संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी आदि की शिक्षा दी। बाद में उन्हें मिशन स्कूल में भेजा गया, उसके पश्चात 'क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज' में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा गया। वहां उनकी मुलाकात सुभद्रा कुमारी चौहान से हुई।

उनके छात्रावास में विभिन्न स्थानों से आए बच्चों में एकता व सहानुभूति की भावना थी। वे कविताएं लिखती थीं। कविता पाठ में उन्हें हमेशा प्रथम पुरस्कार ही मिलता था। एक बार उन्होंने पुरस्कार में मिले चांदी के कटोरे को दान स्वरूप गांधी जी को दे दिया।

इसी संस्मरण में उन्होंने अपने घर के पास रहने वाले जवारा के नवाब साहब के साथ पारिवारिक संबंधों का भी वर्णन किया हैं।

महत्वपूर्ण गद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर –

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा–पूजा की। हमारी कुल देवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

प्रश्न –

1. महादेवी के परिवार में कई पीढ़ियों तक लड़की क्यों नहीं थी?
2. महादेवी के परिवार की कुल देवी कौन थी?
3. महादेवी ने यह क्यों कहा कि मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है?
4. महादेवी के परिवार में हिंदी का वातावरण क्यों नहीं था?
5. कुल–देवी का विलोम लिखो।

2. उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब खर्च में से हमेशा एक–एक, दो–दो अपने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।'

प्रशन –

1. लेखिका को किस प्रकार का कटोरा किस लिए मिला?
2. लेखिका देश के लिए धन की व्यवस्था कैसे करती थी?
3. लेखिका अपना कटोरा किसे दिखाने ले गई?
4. लेखिका ने गांधी जी से कटोरे के बारे में क्या कहा?
5. जेब–खर्च में कौन सा समास है?

गतिविधि –1

'बचपन' शब्द से आपकी कौन–कौन सी स्मृतियां जुड़ी हैं?

गतिविधि – 2

पाठ में अनेक सामासिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन सामासिक शब्दों की सूची बनाइये तथा उनका समास–विग्रह कर समास का नाम भी लिखिए।

गतिविधि –3

महादेवी ने गांधी जी को अपना चांदी का कटोरा देश के लिए दान कर दिया। यदि आपको देश के लिए कुछ देना हो तो आप क्या देंगे?

गतिविधि – 4

महादेवी ने अपने छात्रावास में बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है। आप के आस–पास भी बहुभाषी लोग रहते होंगे। उनकी सूची बनाइये तथा उनकी भाषा के कुछ शब्दों को लिखिए।

गतिविधि – 5

कक्षा के छात्रों को चार समूह में बांटकर, प्रत्येक समूह को निम्न में से एक विषय पर आपस में चर्चा करके अनुच्छेद लिखने को दिया जायेगा।

लेखिका के परिवार में जन्म से पहले ही लड़कियों को मार दिया जाता था।

समूह – 1 – आपकी समझ से ऐसा क्यों होता था?

समूह – 2 – कन्या–भ्रूण हत्या के क्या दुष्परिणाम हैं?

समूह – 3 – वर्तमान समय में भारत में कन्या–भ्रूण हत्या की क्या स्थिति है?

समूह – 4 – भारतमें लिंग–अनुपात की क्या स्थिति है?

अधिगम प्रतिफल –

1. छात्र कन्या–भ्रूण हत्या की त्रासदी से परिचित हैं।
2. छात्रों में देशहित के लिए त्याग की भावना का विकास होता है।
3. छात्रों में बहुभाषी परिवेश से सामंजस्य की भावना विकसित होती है।
4. छात्रों में सामाजिक सद्भाव की भावना बढ़ती है।

कार्य प्रपत्र –

महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़ते हुए आपके मानस पटल पर भी अपने बचपन की कोई स्मृति उभरकर आई होगी। उसे संस्मरण शैली में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

महादेवी जी ने अपने संस्मरण में छात्रावास में बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है। यदि आपके कुछ मित्र आपसे भिन्न भाषा बोलते हैं तो आप उनके कैसे सामंजस्य स्थापित करते हैं? लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

वाख

कवयित्री – 'ललद्यद' – एक सामान्य परिचय

नाम	–	ललद्यद (लल्लेश्वरी, ललयोगेश्वरी, ललारिफा, लला आदि)
जन्म	–	सन् 1320
जन्म स्थान	–	कश्मीर स्थित पाम्पोर का सिमपुरा गांव
शिक्षा	–	अनिश्चित व अप्रामाणिक
पारिवारिक जीवन	–	अप्रामाणिक
देहावसान	–	सन् 1391

प्रस्तुत पाठ 'वाख' 14वीं शताब्दी में कश्मीर में जन्मी पहली शैवयोगिनी कवयित्री ललद्यद द्वारा सुरचित है। ललद्यद का जीवन पारिवारिक सुखों से वंचित तथा एक योगिनी के रूप में भक्तिकाल की श्रेष्ठ कवयित्री मीरा जी के बहुत कुछ समदृश्य है। इनके काव्य रचनाओं में भी शिव के प्रति मीराबाई की सी दीवानगी दिखती है। वहीं दूसरी ओर इनकी कविताओं द्वारा संत कबीर की तरह सामाजिक आडम्बरों का विरोध स्पष्ट मुखर हुआ है। इनकी काव्यशैली को वाख कहा गया है। कश्मीर में ललद्यद के वाख ठीक उसी तरह प्रसिद्ध हैं जैसे कि हिंदी साहित्य जगत में कबीर के दोहे, मीरा के पद, तुलसी की चौपाई और रसखान के सवैये। अपने वाख के जरिए ये कबीर की भांति जाति–पाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर ईश अनुरक्ति के उस मार्ग पर चलने की ओर प्रेरित किया है जिसका संबंध जीवन से हो। इसी का परिणाम है कि वह कबीर की तरह ही हिन्दू और मुसलमान दोनो में लोकप्रिय रही।

भक्ति एवं लोकजीवन के तत्वों से प्रेरित इनके वाख की भाषा सामान्य जनता के पहुंच के अर्थात बोलचाल की भाषा है न कि पण्डिताऊ संस्कृत या दरबार के बोझ से दबी उर्दू–फारसी।

पाठ का प्रतिपाद्य (सार)

कवयित्री ललद्यद का यह पाठ 'वाख' पूर्णतया ईश्वर–भक्ति तथा मोक्ष प्राप्ति पर आधारित है। प्रस्तुत पाठ में कवयित्री ने इस लौकिक जगत से ऊबकर पारलौकिक जगत अर्थात परमात्मा के पास जाने को उद्यत (उतावली) दिखती हैं। परंतु इस लौकिक जगत (मायावी संसार, मृत्युलोक) में रहते हुए अपने कर्मो को इस दृश्य से अपूर्ण बताती है कि जिसके आधार पर वह परमात्मा के घर सहजता से जा सके। अपने कर्मों को कच्ची मिट्टी के सकोरे में पानी भरने से तुलना की है कि जिस प्रकार कच्चा सकोरा पानी को रोक पाने में अक्षम होता है ठीक उसी प्राकर हमारे ये कर्म ईश्वर प्राप्ति के लिए पर्याप्त नहीं हैं। कवयित्री ने वाल्य आडम्बरों का विरोध करते हुए जहां निरा भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का विरोध किया है वहीं दूसरी तरफ व्रत–उपवास आदि का भी विरोध करते हुए इन्द्रिय–निग्रह पर बल देते हुए वही ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र मार्ग बताया है।

इन्होंने कबीर की तरह ही धर्माडम्बर जैसे हिन्दु–मुसलमान में भेद–भाव आदि का विरोध करते हुए सर्वत्र (जल, थल, वायु तथा कण–कण में) शिव की व्याप्ति की शिक्षा दी है एवं उसकी प्राप्ति को ही जीवन का लक्ष्य बताया है।

'वाख' शब्द का अर्थ –

इस शब्द के अर्थ में मत – मतान्तर हैं परंतु इसके कुछ अर्थ इस प्रकार मान्य हैं – वाणी, कथन आदि। परंतु इस शब्द के कुछ और अर्थ है – सक्रिय, उदार, सक्षम, ध्यान, मैत्रीपूर्ण आदि।

पद्यांशों पर आधारित प्रश्न

1. रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव,
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे,
जी मैं उठती रह–रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।

प्र.1 यहां रस्सी शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? और वह कैसी है?

प्र.2 पानी टपके कच्चे सकोरे का भावार्थ लिखो।

प्र.3 कवयित्री किस घर जाने की बात कर रही है?

प्र.4 'भवसागर' शब्द का क्या तात्पर्य है?

2. खा–खाकर कुछ पाएगा नहीं,

न खाकर बनेगा अहंकारी।

सम खा तभी होगा समभावी,

खुलेगी सांकल बंद द्वार की।

प्र.1 'न खाकर बनेगा अहंकारी' से क्या तात्पर्य है?

प्र.2 'सम खा' का क्या अर्थ है?

प्र.3 समभावी बनने से किस द्वार की सांकल खुलने की बात कवयित्री कर रही है?

शिक्षण प्रक्रिया –

1. लय–तुक, आरोह–अवरोह को ध्यान में रखकर काव्य–पाठ का आदर्श वाचन।
2. कुछेक (कतिपय) छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करवाना।
3. कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण बताना।
4. पाठ में आए कुछ सारगर्भित शब्दों के अर्थ बताना।

   जैसे – सम खा, समभावी, सांकल, सुषुम–सेतु, साहिब आदि
5. कविता का भावार्थ बताना।
6. काव्य–सौंदर्य (भाव सौंदर्य व शिल्प सौंदर्य) बताना।
7. कविता पर आधारित कुछ प्रमुख प्रश्न छात्रों द्वारा बनवाना।

कार्य प्रपत्र –

1. अधोलिखित शब्दों के अर्थ लिखे –

   क) कच्चे सकोरे

   ख) सम

   ग) समभावी

   घ) सुषुम–सेतु

   ङ) माझी

2. भाव स्पष्ट करें –

   क) खा खाकर कुछ पाएगा नहीं,
   न खाकर बनेगा अहंकारी।

   ख) सम खा तब होगा समभावी।

   ग) जेब टटोली कौड़ी न पायी।

3. भाषागत विशेषताएं (शिल्प सौंदर्य) संबंधित प्रश्न –

   क) 'वाख' में मुख्य रूप से कौन सी भाषा प्रयुक्त हुई है?

   ख) संपूर्ण काव्यांश में प्रयुक्त प्रमुख अलंकारों के नाम लिखें।

   ग) 'सुषुम–सेतु' में कौन सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है एवं इसका प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

अधिगम प्रतिफल –

1. प्रस्तुत कविता के माध्यम से छात्रों में अधोलिखित तथ्यों के प्रति जागरूकता बढ़ी एवं ज्ञानार्जन किया।

2. 'वाख' नामक छंद से परिचित हुए।

3. कवयित्री ने 'वाख' के माध्यम से इहलौकिक एवं पारलौकिक जगत में अंतर बताने का प्रयास किया जिससे छात्र अवगत हुए।

4. छात्र वाहय आडंबरों का विरोध को जानते हैं।

5. कर्मकांड की बजाय परोपकार, त्याग, शुद्धकर्म, सहज–साधना आदि पर बल देते हैं।

6. छात्रों में इस भावना को बल मिलता है कि कर्म ही पूजा है, आडम्बर, दिखावा एवं कर्म से विरक्त होकर ईश्वर प्राप्ति नहीं हो सकती।

चंद्रगहना से लौटती बेर

(केदारनाथ अग्रवाल)

कवि परिचय – श्री केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1911 में कमसिन गांव जिला बांदा उत्तरप्रदेश में हुआ था। प्रयाग में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् आगरा विश्व विद्यालय से एल.एल.बी. परीक्षा पास कर वकालत का कार्य प्रारंभ किया। आप प्रगतिवादी विचारधारा के मुख्य कवि हैं। नींद के बादल, युग की गंगा, लोक और अलोक, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आईना, कहे केदार खरी–खरी, पंख और पतवार आदि प्रमुख रचनाएं है। उनकी कविताओं में सामान्य जन का संघर्ष और प्रकृति सौंदर्य की छटा प्राप्त होती है। केदारनाथ के साहित्य में बुंदेलखंड के जीवन की उमंग और खुलापन दिखाई देता है। वे ग्रामीणी जीवन के बिंबों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

कविता परिचय – 'चंद्रगहना से लौटती बेर' इस कविता में कवि का प्रकृति के प्रति गहन प्रेम और अनुराग अभिलक्षित होता है। 'चंद्रगहना' विशेष स्थान से लौटते समय कवि प्राकृतिक दृश्य निहारता हैं। इस दृश्य को देखने के लिए वह खेत की मेड़ (डोला) पर बैठ जाता है। खेत में फसलों का सौंदर्य देखते समय उसकी दृष्टि चने के पौधे पर पड़ती है। कवि को लगा मानो वह सज–धजकर सिर पर गुलाबी फूल का साफा (पगड़ी) बांधकर शादी में जाने को तैयार है। चने के पास में ही अलसी उग आई है। लगता है कि पतला शरीर, लचकदार कमर तथा सिर पर नीले फूल धारण कर प्रेमातुर नायिका के रूप में है। कवि ने सरसों का पौधा देखा कवि वर्णन करता है कि सरसों सबसे सयानी हो गई है।

कवि को ऐसा लगता है जैसे उसने विवाह मंडप में जाने हेतु अपने हाथों को पीला कर रखा है। कवि का संदेश है कि शहरों की अपेक्षा गांव की जमीन प्यार के विषय में अधिक उपजाऊ है। यहां मनुष्य ही नहीं पेड़–पौधे भी प्यार करते हैं। तालाब के माध्यम से जल संरक्षण का ज्ञान कवि देना चाहता है। बगुले की ध्यानावस्था, चतुर चिड़िया का शिकार करना शोषक और शोषित वर्ग का प्रतीक सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। खेतों के मध्य प्राकृतिक दृश्यों में रेल की पटरी का आना प्रगतिवादी दृष्टिकोण है। दूर तक फैली चित्रकूट की पहाड़िया, उन पर उगे वृक्षों पर बैठे पक्षी और उनके कलरव को कवि शहरी विकास की प्रगति से बचाए रहना चाहता है। इसी प्रकृति की वात्सल्य से परिपूर्ण गोद में कवि शांति की अनुभूति करता है।

महत्वपूर्ण काव्यांश –

क) देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बांधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सजकर खड़ा है।

प्रश्न –

1. चंद्रगहना से लौटते समय कवि कहां रूका और क्यों?
2. कवि की दृष्टि खेत में सर्वप्रथम किस पर पड़ी?
3. एक बीते के बराबर से कवि का क्या तात्पर्य है?
4. चने का पौधा कवि को कैसा लगा?
5. चने ने किसका मुरैठा बांध रखा था?

ख) और सरसों की न पूछो –
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं
ब्याह मंडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में,

दूर व्यापारिक नगर से

प्रेम की पिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

प्रश्न –

1. सरसों को सयानी क्यों कहा गया है?
2. प्रकृति को देखकर स्वयंवर होने जैसा क्यों लग रहा है?
3. प्रकृति का अनुराग अंचल हिलने से क्या तात्पर्य है।
4. प्रेम की पिय भूमि उपजाऊ कैसे है?
5. 'दूर व्यापारिक नगर से' कथन से किस ओर संकेत किया गया है?

भाषागत विशेषता –

1. प्रस्तुत कविता में देशज शब्दों से युक्त सरल, सहज तथा मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया गया है।
2. शब्द सौंदर्य अनुपम है जैसे – फाग, पोखर, लचीली, ठिगना, मुरैठा, सयानी, टिरटों–टिरटों आदि।
3. उक्तिपूर्ण काव्य शैली दर्शनीय है। जैसे 'और सरसों की न पूछो।'

महत्वपूर्ण प्रश्न –

1. कविता में चांदी का गोल खंबा किसे कहा गया है?
2. कवि ने बगुले चिड़िया और चटुल मछली का प्रयोग किस प्रतीक के रूप में किया है?
3. प्रकृति अपनी प्रसन्नता किस प्रकार व्यक्त कर रही है?
4. चित्रकूट की पहाड़ियों के प्राकृतिक सौंदर्य को व्यक्त कीजिए।
5. सारस की आवाज सुनकर कवि क्या करने के लिए बेचैन हो उठता है?

गतिविधियाँ –

1. छात्रों को दो या तीन समूह में विभाजित कर कविता के अलग–अलग अंतरे को उचित लय, गति आरोह–अवरोह शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर वाचन करवाया जा सकता है।
2. छात्रों के अलग–अलग समूह को कविता में प्रयुक्त देशज शब्द तथा मुहावरों को खोजकर लिखने के लिए दिया जा सकता है।
3. गांव के परिवेश से जुड़ी प्राकृतिक संपदा के संदर्भ में छात्रों को लिखने को कहा जा सकता है।
4. कविता में प्रयुक्त अलंकारों को छांटकर एक दूसरे समूह से अलंकारों की सूची बनाई जा सकती है।

आंकलन –

पाठ को पढ़ाने के पश्चात् पाठ का आकलन करना कि सभी छात्रों ने पाठ के अच्छी प्रकार आत्मसात् किया है या नहीं? इसका आकलन करने कुछ प्रश्न करते हैं जैसे –

1. चंद्रगहना क्या है? यह कहाँ है?
2. कवि चंद्रगहना से लौटते समय कहाँ रूका और क्यों?
3. प्रकृति में ऐसा क्यों लगा कि स्वयंवर हो रहा है?
4. चना और सरसों का रूप सौंदर्य कैसा था?
5. अलसी को हठीली क्यों कहा है?
6. तालाब के किनारे पड़े पत्थरों को देखकर कवि को कैसा लगा ?
7. तालाब में बगुला और चिड़ियां क्या कर रहे थे?
8. सारस पक्षी को प्रेम का उदाहरण क्यों दिया जाता है?
9. चित्रकूट की पहाड़ियां कैसी थी?
10. शहर और गांव के जीवन में प्रेम अधिक कहाँ पाया जाता है?
11. रीवां के पेड़ कहां उगे थे? उनकी दो विशेषताएं लिखिए।

अधिगम प्रतिफल

क) छात्र कविता को शुद्ध उच्चारण, लय, गति, आरोह–अवरोह के साथ पढ़ते हैं।

ख) वे पर्यावरण के प्रति प्रेम दर्शाते हैं। प्रकृति से जुड़ने की उत्सुकता उत्पन्न होती है जिससे उनमें प्रकृति प्रेमी के गुण परिलक्षित होती है।

ग) उनमें तालाब का वर्णन करते हुए जल का संरक्षण करने की प्रेरण प्राप्त होती है।

घ) वे शोषक–शोषित के अर्थ को समझते हैं जिसका वे अपने जीवन हेतु जीवन कौशल के रूप में करते हैं।

ङ) उनमें देशज शब्द भंडार में वृद्धि होती है तथा वे मुहावरों का सटीक प्रयोग करते हैं।

कार्य प्रपत्र –

क) कविता में प्रयुक्त मुहावरों को छांटकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

ख) चंद्रगहना से लौटती बेर कविता में प्रयुक्त अलंकारों को छांटकर लिखिए –

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

ग) 'पर्यावरण संरक्षण' विषय पर स्वरचित काव्य पंक्तियां लिखिए –

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

6. ....

घ) ग्रामीण जीवन की पांच विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

ङ) कविता के आधार पर कवि की कल्पना को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए –

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

6. ....

मेरे संग की औरतें

'मेरे संग की औरतें' मृदुला गर्ग द्वारा रचित संस्मरण है जिसमें लेखिका ने अपने परिवार की महिलाओं के चरित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि परंपरागत रूप से जीवन व्यतीत करते हुए भी कैसे लीक से हटकर कार्य किया जाता है। इन चरित्रों में उनकी नानी, माँ, परदादी और उनकी बहनें शामिल हैं।

सर्वप्रथम लेखिका अपनी नानी के बारे में बताती है कि उनकी नानी ने एक परंपरागत एवं पर्दे में रहने वाली स्त्री होने के बावजूद अपनी बेटी का विवाह किसी स्वतंत्रता सेनानी से कराने का निर्णय लिया।

दूसरा चरित्र उनकी माँ का है, जिन्हें पुस्तक पढ़ने, साहित्य चर्चा तथा संगीत सुनने में बहुत रूचि थी। वे कभी झूठ नहीं बोलती थी और एक ही गोपनीय बात दूसरे को नहीं बताती थी। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण उन्हें घरवालों से आदर मिलता था तथा बाहर वालों से मित्रता।

परंपरा से हटकर जीने वाली लेखिका की परदादी भी थी जिन्होंने अपनी बहू के लिए पहली संतान के रूप में लड़की की मन्नत मांगी। एक बार उन्होंने एक चोर को अपने लोटे का शेष पानी पिलाकर बेटा बना लिया और चोरी छोड़कर खेती करने की सलाह दे डाली।

लेखिका और उसकी चारों बहनें भी लड़कियां होते हुए भी कभी हीनभावना से ग्रस्त नहीं हुई और सदा लीक पर चलने से इंकार ही करती रहीं। लेखिका ने कर्नाटक के बागलकोट में अपने तथा अपने जैसे विचार वाले लोगों की सहायता से अंग्रेजी–कन्नड़–हिंदी भाषाएं पढ़ाने वाली प्राइमरी स्कूल खोला और बाद में उसे कर्नाटक सरकार से मान्यता भी दिलवाई।

मूल्यपरक प्रश्न –

1. लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?
2. लेखिका की परदादी ने बहू की पहली संतान के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत मांगी। परदादी की इस सोच से आप कितने सहमत है?
3. लेखिका की परदादी ने एक चोर को अपना बेटा बना लिया और उसे चोरी छोड़कर खेती करने की सलाह दे डाली। क्या आप सहमत है कि समाज के ऐसे लोगों को सुधरने का अवसर मिलना चाहिए?
4. समाज में कैसे लोगों को अधिक श्रद्धाभाव से देखा जाता है?

कक्षा के विद्यार्थियों को चार समूहों में बांटकर प्रत्येक समूह को निम्न में से एक गतिविधि दी जायेगी। प्रत्येक समूह इसकी प्रस्तुति कक्षा के सामने करेगा।

गतिविधि – 1

देश की प्रभावशाली महिलाओं की एक सूची बनाइये।

गतिविधि – 2

देश की किसी प्रभावशाली महिला का जीवन परिचय लिखिये।

गतिविधि – 3

आपके परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में आपकी माँ की क्या भूमिका होती है?

गतिविधि – 4

अपने परिवार की स्त्रियों के कार्यों की सूची बनाइये।

अधिगम प्रतिफल –

1. छात्रों में लैंगिक समानता की भावना का विकास होता है।
2. छात्रों में महिलाओं के पारिवारिक नेतृत्व की क्षमता में विश्वास बढ़ता है।
3. छात्रों में महिलाओं के सामाजिक नेतृत्व की क्षमता में विश्वास बढ़ता है।

4. छात्रों में लीक से हटकर कुछ नया करने की सोच विकसित होती है।

कार्य प्रपत्र –

1. शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है – इस संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

2. लेखिका के परिवार की महिलाओं में से आप किससे सर्वाधिक प्रभावित हैं और क्यों?

....

....

....

....

....

....

....

....

समास

परिचय – मेल–मिलाप या संक्षेप को समास कह सकते हैं। समास में दो या दो से अधिक पदों का मेल होता है। संधि और समास में छात्र भ्रमित हो जाते हैं। उन तक स्पष्टता पहुंचनी चाहिए कि

संधि – वर्णों का मेल

समास – पदों का मेल

समास के घटक और भेद

समास को समझने के लिए कुछ पदों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

2.1

पूर्व पद	उत्तर पद	समस्त पद
पहला पद	आखिरी पद	नया शब्द

2.2 **समस्त पद** – समास के द्वारा मिलकर बने नए पद को 'समस्त पद' कहते हैं।

2.3 **समास विग्रह** – जब कोई 'समस्त पद' हो और उसमें से 'पूर्वपद' और 'उत्तर पद' को अलग–अलग करना हो तो समास विग्रह कहते हैं।

2.4 **समास के भेद**

2.4.1 **तत्पुरूष समास** – जिस शब्द में उत्तर पद प्रधान (मुख्य) होता है, और पूर्व पद उसकी विशेषता बतलाता है अर्थात गौण होता है। जैसे –

समास शब्द	**विग्रह**
शरणागत	शरण को आया

जन्मरोगी	जन्म से रोगी
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
धनहीन	धन से हीन
जलधारा	जल की धारा
कार्यनिपुण	कार्य में निपुण

2.4.2 **कर्मधारय समास** – कर्मधारय समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्व पद व उत्तर पद में विशेषण–विशेष्य अथवा उपमान–उपमेय का भाव होता है। जैसे –

समास शब्द	**विग्रह**
पीताम्बर	पीला अंबर (वात)
महावीर	महान है जो वीर
नरसिंह	सिंह के समान नर
चरण–कमल	चरण रूपी कमल
मृगनयन	मृग के समान नयन

2.4.3 **द्विगु समास** – जिस समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे

समास शब्द	**विग्रह**
नवग्रह	नौ ग्रहों का समाहार
पंचवटी	पांच वटों का समूह
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समूह
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार

2.4.4 **बहुब्रीहि समास** – जिस समास में कोई भी पद प्रधान न हो, बल्कि समस्त पद किसी अन्य प्रधान वस्तु या व्यक्ति का बोध कराते हों, वहां बहुब्रीहि समास होता है। जैसे –

समास शब्द	विग्रह
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका (शिव जी)
गजानन	गज (हाथी) है आनन (मुख) जिसका (गणेश)
पतझड़	सड़ जाते है पत्ते जिसमें (ऋतु) विशेष
विषधर	विष को धारण कर रखा है जिसने (सर्प)
मृत्युंजय	मृत्यु को जीत लिया हो जिसने (शंकर)

2.4.5 **द्वंद्व समास** – जिस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे –

समास शब्द	विग्रह
माता–पिता	माता तथा पिता
राम–लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
दाल–भात	दाल और भात
आगे–पीछे	आगे अथवा पीछे
आटा–दाल	आटा और दाल

2.4.6 **अव्ययीभाव समास** – जिस समास का पूर्व पद प्रधान और अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

समास शब्द	विग्रह
यथा समय	समय के अनुसार
भर पेट	पेट भर कर
प्रतिक्षण	क्षण–क्षण
आजीवन	जीवन–पर्यन्त
अनुरूप	रूप के योग्य

3. गतिविधि –

बोर्ड या चार्ट पर निम्नलिखित तालिकाओं को लगाएं और छात्रों को उचित स्थान पर शब्दों को रखने के लिए कहें–

3.1 सामासिक शब्द –

'लोकप्रिय, घुड़सवार, रात–दिन, शरणागत, महात्मा, त्रिवेणी, दीन–ईमान, प्रत्येक, मृगनयन, घनश्याम, गजानन, रसोईघर, भाई–बहन, यथा–शक्ति, नीलाम्बर'

उपर्युक्त शब्दों को नीचे दी गई तालिका – 1 में उचित स्थान पर लिखे तथा तालिका–2 को भी पूर्ण करो।

तालिका – 1

प्रधान शब्द ....

गौण पद ....

विशेष्य पद ....

विशेषण पद ....

अव्यय पद ....

संख्यावाची पद ....

तालिका – 2

पूर्वपद +	उत्तर पद	= समस्त पद

अब उपर्युक्त तालिका का मिलान निम्न तालिका से करें –

तालिका – 3

पूर्व पद	उत्तर पद	समास
––	प्रधान शब्द	तत्पुरूष
विशेषण पद	विशेष्य पद	कर्मधारय
संख्यावाची	––	द्विगु
गौण पद	गौण पद	बहुब्रीहि
प्रधान पद	प्रधान पद	द्वंद
अव्यय पद	अव्यय (क्रिया–विशेषण का का करता है।)	अव्ययी भाव

4. आकलन

बच्चों को शब्दों से खेलना आना चाहिए।

शब्द–युग्म के प्रति सजगता का भाव होना चाहिए।

मुख्य शब्द और सहायक शब्दों को पकड़ने का कौशल विकसित करना।

5. अधिगम प्रतिफल

छात्र प्रतिदिन समासिक शब्दों का प्रयोग करते हैं।

इन शब्दों के अर्थों से भली–भांति परिचित है।

छात्रों को शब्दों के निर्माण के प्रति उत्सुक्ता होती है।

6. कार्य प्रपत्र –

पूर्व में दी गई गतिविधि को ही हस्त प्रपत्र के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

वाक्य भेद (अर्थ के आधार पर)

परिचय – सामान्य जीवन में वाक्य का विशेष महत्त्व है, क्योंकि मनुष्य के भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्यों में ही होती है। वाक्य एक शब्द का भी हो सकता है और अनेक शब्दों का भी। वाक्य में आने वाले शब्दों का एक निश्चित क्रम होता है और सभी शब्द व्याकरणिक नियमों में बंधे रहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द पद बन जाते है। इनके बीच परस्पर अन्विति होती है, अर्थात वे लिंग, वचन, पुरूष आदि के अनुसार अपना स्वरूप निर्धारित करते हैं। वाक्य के दो अंग होते है – उद्देश्य ओर विधेय।

वाक्य के भेद – वाक्यों के आधार पर भेद किये जा सकते हैं – अर्थ तथा रचना।

अर्थ के आधार पर वाक्य भेद – अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं।

1. विधानवाचक वाक्य
2. निषेधवाचक वाक्य
3. प्रश्नवाचक वाक्य
4. आज्ञावाचक वाक्य
5. संदेहवाचक वाक्य
6. इच्छावाचक वाक्य
7. संकेतवाचक वाक्य
8. विस्मयादिबोधक वाक्य

गतिविधि – 1

उद्देश्य –
- अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेदों का ज्ञान
- वाक्य निर्माण का अभ्यास

प्रक्रिया –
- पांच–पांच विद्यार्थियों के समूह बनाकर प्रत्येक समूह को चार्ट पेपर और रंगीन स्केच पेन दिये जाएंगे।

- प्रत्येक समूह से अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेद उदाहरण सहित लिखने को कहा जायेगा।

गतिविधि – 2

प्रत्येक विद्यार्थी को एक–एक पर्ची पर अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रकार के नाम लिखकर दिये जाएंगे।

आप एक वाक्य बोलेंगे। वाक्य का प्रकार पहचानकर उस नाम की पर्ची वाले विद्यार्थी अपनी पर्ची खड़े होकर दिखायेंगे।

गतिविधि – 3

अध्यापक दस उदाहरण विकल्प सहित लिखकर छात्रों को देंगे।

उदाहरण –

1. भारत एक महान देश है।

☐ विधानवाचक ☐ निषेधवाचक ☐ आज्ञावाचक

2. वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

☐ संकेतावाचक ☐ विस्मयादिबोधक ☐ प्रश्नवाचक

गतिविधि – 4

अध्यापक उदाहरण व वाक्यों के प्रकार के नाम लिखकर सही मिलान करने को देंगे।

अधिगम प्रतिफल –

1. छात्र वाक्य निर्माण कर लेते है।
2. छात्र अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेद से परिचित हो जाते हैं।
3. छात्र अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के वाक्य लिख लेते हैं।
4. छात्र अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के वाक्यों में भेद (अंतर) कर लेते हैं।

कार्य प्रपत्र –

1. निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरण कीजिए –

    1. पक्षी आसमान में उड़ते हैं। (निषेधवाचक)

    ....

    2. शिवम पत्र लिखता है। (प्रश्नवाचक)

    ....

    3. शोर मचाने वाले बालक पकड़ लिए गये। (प्रश्नवाचक)

    ....

    4. वह फल खरीदने के लिए बाजार गया। (संकेतवाचक)

    ....

    5. मेरे सिर में दर्द हो रहा है। (विस्मयादिबोधक)

    ....

2. निम्नलिखित के दो–दो उदाहरण लिखिए –

    1. आज्ञावाचक वाक्य

    1. ....

    2. ....

    2. इच्छावाचक वाक्य

    1. ....

2. ....

3. संदेहवाचक वाक्य

1. ....

2. ....

4. विस्मयादिबोधक वाक्य

1. ....

2. ....

5. संकेतवाचक वाक्य

1. ....

2. ....

अलंकार

परिचय – अलंकार शब्द का अर्थ होता है – शोभा, आभूषण, श्रृंगार या प्रसाधन अर्थात काव्य के सौंदर्यवर्धक तत्व को ही अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार श्रृंगार से (अलंकार से) किसी रमणी की शोभा या सौंदर्य में वृद्धि होती है उसी प्रकार अलंकार कविता को प्रेषणीय बना देते हैं।

"अलंकरोतीति अलंकारः।" अर्थात जो सुशोभित करता है, वह अलंकार है। आचार्य दंडी ने अपनी पुस्तक 'काव्यादर्श' में काव्य के शोभा विधायक धर्म को अलंकार कहा है। इसी प्रकार आचार्य मम्मट के अनुसार –

"काव्य शोभा करान् धर्मान् अलंकार प्रचक्षते।"

अलंकार के भेद –

काव्य में शब्द और अर्थ दोनों की बराबर महत्ता होती है। इसी आधार पर अलंकार के दो भेद किए गए है।

1. शब्दालंकार   2. अर्थालंकार

1. शब्दालंकार – परिचय एवं परिभाषा –

जहाँ पर कविता में शब्दगत चमत्कार उत्पन्न होते हैं, वहां शब्दालंकार होता है अर्थात् जब काव्य में विशेष प्रकार के शब्दों के प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न होता हो परंतु यदि उन शब्दों के स्थान पर उनके समानार्थी या पर्यायवाची शब्द रख देने से वह चमत्कार (आकर्षण) विलुप्त हो जाए तब वहां शब्दालंकार होता है। इस तरह स्पष्ट है कि विशिष्ट प्रकार के शब्दों के प्रयोग से ही जहां काव्य में चमत्कार या आकर्षण उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

जैसे – **तरनि तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाए।**

ध्यातव्य है कि उक्त पंक्ति में त की आवृत्ति वाले विभिन्न शब्दों के क्रमशः आने पर ही अलंकार उत्पन्न हुआ है।

शब्दालंकार के भेद –

शब्दालंकार के प्रमुख अलंकार एवं उनके परिचय इस प्रकार है –

1. अनुप्रास अलंकार 2. यमक अलंकार 3. श्लेष अलंकार

अनुप्रास अलंकार – अनुप्रास अर्थात् अनु **+** प्रास। अनु का अर्थ होता है बार–बार तथा प्रास का अर्थ होता है रखना। अर्थात जहाँ बार–बार वही वर्ण रखा जाए वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे –

1. चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रही है जल–थल में।

(च वर्ण की बारंबार आवृत्ति)

2. तरनि तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाए।

(त वर्ण की आवृत्ति)

यमक अलंकार – यमक शब्द का अर्थ है – युग्म या जोड़ा

एक शब्द पुनि–पुनि पड़ै, अर्थ और ही और

सो यमकालंकार है, बरनत ही जेहि ठौर।

अर्थात् जहाँ एक ही शब्द बार–बार आए और अर्थ भिन्न–भिन्न हो वहां यमक अलंकार होता है।

जैसे –

1. काली घटा का घमंड घटा। (घटा – 1. बादल, 2. कम होना)

2. तीन बेर खाती थी वो, तीन बेर खाती हैं। (बेर – 1. बार, 2. फल)

श्लेष अलंकार – 'श्लेष' शब्द का अर्थ है – चिपका हुआ

दोय तीन अरू भांति बहु, आने जामे अर्थ।

श्लेष नाम तासो कहत, जाकी बुद्धि समर्थ।

अर्थात जहाँ कोई शब्द एक बार प्रयुक्त हो परंतु उसके दो या दो से अधिक अर्थ निकाले जा सकें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

जैसे –

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोय।

बारे उजियारे करै, बढ़ो अंधेरो होय।

यहाँ बारे शब्द के दो अर्थ है – बड़ा होना, बुझना

सुबरन को खोजत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर

यहाँ पर सुबरन शब्द के क्रमशः सुंदर अक्षर, सुंदर युवती एवं सोना तीन अर्थ हैं।

श्लेष अलंकार के भेद –

श्लेष अलंकार भी दो प्रकार का होता है।

1. अभंग पद श्लेष 2. सभंग पद श्लेष

अर्थालंकार

जहाँ पर काव्य में चमत्कार अर्थगत होता है, वहां पर अर्थालंकार होता है।

भेद – अर्थालंकार के कुछ महत्वपूर्ण भेद एवं उनका परिचय इस प्रकार है –

जहाँ किसी प्रस्तुत व्यक्ति या वस्तु की किसी अप्रस्तुत व्यक्ति या वस्तु से उसके रूप गुण, धर्म आदि के सादृश्य के आधार पर तुलना की जाती है, वहां उपमा अलंकार होता है।

जैसे – पीपर पात सरिस मन डोला।

उपमा के चार अंग होते है।

1. उपमेय 2. उपमान 3. साधारण धर्म 4. वाचक

जैसे – मुख (उपमेय), चन्द्रमा (उपमान) के समान (वाचक), सुन्दर (साधारण धर्म) है।

उपमा के वाचक शब्द – जहां पर वाचक के रूप में सी, समान, के जैसा, सरिस, सम आदि शब्द प्रयुक्त हों, वहां उपमा अलंकार होता है। कुछ अन्य उदाहरण दृष्टव्य है :–

1. वह दीपशिखा सी शांतभाव में लीन।

2. बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा।

उत्प्रेक्षा अलंकार – जहां पर उपमेय (प्रस्तुत) में उपमान (अप्रस्तुत) की संभावना या कल्पना की जाए वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इनके वाचक शब्द होते हैं – मनु, मानो, जनु, जनहु, जानो, मनहु

ज्यों आदि।

जैसे –

1. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।

मनो नीलमणि शैल पर आतप पर्‌यौ प्रभात।

2. मनु हग फारि अनेक जमुन निरखत ब्रज सोभा।

3. पाहुन ज्यों आए हों गांव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन ठन के संवर के।

रूपक अलंकार – जहां रूप गुण आदि की अत्यंत समानता दिखाने के लिए प्रस्तुत (उपमेय) में अप्रस्तुत (उपमान) का निषेधरहित आरोप या अभेद–स्थापन किया जाए वहां रूपक अलंकार होता है।

जैसे –

1. चरण–कमल बन्दौ हरिराई।

2. बीती विभावरी जागरी अंबर पनघट में डुबो रही ताराघट उषा नागरी।

उपरोक्त रेखांकित पद युग्म में अभेद आरोपण के कारण रूपक अलंकार है।

मानवीकरण अलंकार – जहां पर मानवेतर प्राणियों, जड़ पदार्थों या प्रकृति पर मानवीय भावनाओं, क्रियाकलापों आदि का बोध होता है, वहां मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे –

1. दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही

2. मेघ आये बड़े बन ठन के संवर के।

3. उषा सुनहले तीर बरसती

जय लक्ष्मी सी प्रकट हुई

अतिश्योक्ति अलंकार – जहां पर किसी गुण या स्थिति का बहुत बढ़ा चढ़ाकर वर्णन किया जाए वहां अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

जैसे –

1. छाले परिबे के डरनि, सकै न हाथ छुआए।
   झझकति हियैं गुलाब के, झवै झवैयत पाए।
2. हनुमान की पूंछ में, लगन न पाई आग।
   लंका सगरी जल गयी, गये निशाचर भाग।

गतिविधियां –

1. अलंकार शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए परिभाषित कीजिए।
2. अलंकार के कितने भेद होते हैं?
3. श्लेष अलंकार की पहचान सोदाहरण दीजिए।
4. अलंकार के भेदोपभेद को एक वृक्ष के माध्यम से चित्रित कीजिए।

आकलन –

अधोलिखित पद्यांशों में अलंकार पहचान कर लिखिए।

1. विमल वाणी ने वीणा ली।
2. मुदित महीपति मंदिर आए।
3. कहैं कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लेनी।
4. उस काल मारे क्रोध के, तनु कांपने उनका लगा।
   मानो हवा के जोर से, सोता हुआ सागर जगा।

कार्य प्रपत्र –

1. शब्दालंकार एवं अर्थालंकार में अंतर स्पष्ट करते हुए दोनों के एक–एक अलंकारों के उदाहरण दीजिए।
2. अपनी पाठ्यपुस्तक से मानवीकरण–रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलंकार के दो–दो उदाहरण प्रस्तुत करें।
3. यमक और श्लेष में अंतर स्पष्ट करते हुए उदाहरण दीजिए।
4. उपमा और उत्प्रेक्षा में सोदाहरण अंतर स्पष्ट कीजिए।

संवाद लेखन

परिचय – जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच बातचीत होती है तो उसे संवाद कहते हैं। इसी संवाद को लिखना 'संवाद लेखन' कहलाता है। जिसे संवाद लेखन कौशल भी कहते हैं।

संवाद लेखन – ध्यान योग्य तथ्य –

- सरल भाषा एवं संक्षिप्त संवाद
- पात्र एवं घटना अनुरूप संवाद
- रोचक एवं प्रभावी संवाद
- हाव–भाव दर्शाने वाले आयामी चिह्न स्वं संकेतों का उपयोग
- संवाद पढ़ते हुए या सुनते हुए स्वाभाविकता लगे।

गतिविधियाँ –

संवाद लेखन गतिविधि

समय – 15 मिनट

उद्देश्य : – प्रतिभागी इस गतिविधि के पश्चात्

– संवादों को विषय अनुकूल लिखना सीख पायेंगे

– मनोभावों को पकड़ने का प्रयास करेंगे।

– संवाद लिखने का कौशल विकसित कर पायेंगे।

अध्यापक कथन –

दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाले संप्रेषण/बातचीत को संवाद कहते हैं।

प्रक्रिया

दो–दो प्रतिभागियों/छात्र को खड़ा किया जाए उन्हें किसी विषय/घटना/परिस्थिति आदि को संवाद करने को कहेंगे।

– दो अन्य प्रतिभागी/छात्र इन संवादों को कागज़ पर लिखेंगे।

– इस गतिविधि को किसी पाठ के आधार पर भी किया जा सकता है, जैसे 'लखनवी अंदाज' पाठ के नवाब साहब और लेखक के चरित्रों के बीच होने वाले संवाद के रूप में।

– गतिविधि के अंत में संवादों का मूल्यांकन भी प्रतिभागियों/छात्रों द्वारा किया जायेगा। जिसका आधार इस प्रकार होगा।

संवाद मूल्यांकन के आधार	अंक
मौलिकता	1
स्पष्टीकरण	1
भाषा प्रवाह	1
उच्चारण	1
भावाभिव्यक्ति	1

4. संवाद लेखन में होने वाली त्रुटियां

– विषय से भटकाव

– संवाद भाषण का रूप ले लेता है।

– व्यक्तिगत संवाद बन कर वह जाता है।

– आरंभ और अंत का विशेष ध्यान नहीं रखा जाता।

5. आकलन –

'संवाद–लेखन' पाठ के अधिगम का आकलन भी गतिविधि के मूल्यांकन के आधारों की भांति होगा।

आकलन के आधार इस प्रकार हो सकते हैं।

– संवाद का विस्तार, मौलिकता लिये हों।

– अनावश्यक घटनाएं या भटकाव न हों।

– विषय स्पष्ट हो रहा हो।

– अभिव्यक्ति स्पष्ट हो।

– भाषा संवाद के अनुरूप और हिंदी शब्द युक्त हो।

– व्याकरण संबंधी बिंदु जैसे वर्तनी, शब्द–रचना, शब्द चयन, वाक्य रचना, विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया गया हो।

6. अधिगम प्रतिफल

– छात्र प्रतिदिन बातचीत में संवादों के प्रयोग से परिचित होते हैं।

– उनमें संवाद में भाषा के उतार–चढ़ाव का ओर अपनी बात प्रभावशाली तरीके से रखने का कौशल होता है।

– छात्र संवाद/बातचीत में सजग होते हैं।

– छात्र लेखन संबंधी आवश्यक बातों से परिचित होते हैं।

7. विद्यालय में होने वाली – 'कविता प्रतियोगिता' में भाग लेने वाले दो छात्रों के बीच संवाद –

अशोक – रमेश कैसे हो?

रमेश – मैं ठीक हूँ। तुम्हें पता है, विद्यालय में सोमवार को 'कविता प्रतियोगिता' का आयोजन होने जा रहा है।

अशोक – नहीं, अभी मुझे इस बारे में जानकारी नहीं है। क्या तुम इसमें हिस्सा ले रहे हो?

रमेश – हाँ, मैं उसी के बारे में और अधिक जानकारी के लिए 'संगीत कक्ष' की ओर जा रहा हूँ।

अशोक – चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। मुझे भी हिस्सा लेना है।

रमेश – तुम कविता गाकर सुनाओगे या वाचन द्वारा।

अशोक – गाकर, और तुम?

रमेश – मुझसे तो गाया नहीं जाता।

मैं तो कविता का वाचन ही करूंगा।

अशोक – मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।

रमेश – धन्यवाद! मेरी भी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।

नोट –

(प्रतिभागी/छात्र इस संवाद का आकलन करे तथा संवाद में होने वाली सामान्य त्रुटियों की सूची बनायें तथा कक्षा में चर्चा करे।)

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

परिचय – प्रस्तुत पाठ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस के बालकांड से लिया गया है। सीता–स्वयंवर में शिवधनुष टूटने की खबर मिलने पर परशुराम स्वयंवर स्थान पर क्रोधित होकर हाथों में फरसा लिए आ जाते हैं। वे धनुष तोड़ने वाले को सहस्त्रबाहु की तरह दंडित होने और सामने न आने पर वहाँ उपस्थित सभी राजाओं को मारे जाने की धमकी देते हैं। लक्ष्मण परशुराम को यह कहकर और क्रोधित कर देते हैं कि उन्होंने बचपन में बहुत सारे धनुष तोड़े है, तब वे मना करने क्यों नहीं आये और जब पुराना और कमजोर धनुष श्री राम के हाथों में आते ही टूट गया तो क्यों क्रोधित हो रहे हैं। परशुराम जब अपनी ताकत से धरती को कई बार क्षत्रियों से हीन करके ब्राह्मणों को दान देने और गर्भस्थ शिशुओं तक के नाश करने की बता बताते हैं तो लक्ष्मण उन पर शूरवीरों से पाला न पड़ने का व्यंग्य करते है। ऋषि विश्वामित्र परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए लक्ष्मण को बालक समझकर माफ करने का आग्रह करते हैं। वे समझाते हैं कि राम और लक्ष्मण की शक्ति का परशुराम को अंदाजा नहीं है। अंत में लक्ष्मण के द्वारा कही गई गुरुऋण उतारने की बात सुनकर परशुराम अत्यंत क्रुद्ध होकर फरसा संभाल लेते हैं। तब सारी सभा में हाहाकार मच जाता है और तब श्रीराम अपनी मधुर वाणी से परशुराम की क्रोध रूपी अग्नि को शांत करने का प्रयास करते है।

1. काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर –

नाथ संभुधनु भंज निहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।

आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।

सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।

सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा।

प्रश्न –

1. परशुराम जनक की सभा में आकर क्या प्रश्न करते हैं?

2. राम के अनुसार शिव का धनुष किसने तोड़ा है?

3. धनुष तोड़ने वाले को परशुराम किसके समान शत्रु बताते हैं?

4. शंकर के किन–किन पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग इस पद में हुआ है?

5. यह पद किस भाषा में लिखा गया है?

2. बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।

पुनि–पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूंकि पहारू।

इहां कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।

देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।

प्रश्न –

1. लक्ष्मण परशुराम पर क्या व्यंग्य करते है?

2. 'कुम्हड़बतिया' की क्या विशेषता होती है?

3. लक्ष्मण के अनुसार परशुराम बार–बार फरसा दिखाकर क्या करना चाहते हैं?

4. इस काव्यांश में कौन सा मुहावरा प्रयुक्त हुआ है?

गतिविधि – 1

तुलसीदास द्वारा रचित परशुराम–लक्ष्मण संवाद मूल रूप से व्यंग्य काव्य है। इस प्रसंग में किन–किन पंक्तियों में व्यंग्य कथनों का प्रयोग किया गया है?

गतिविधि – 2

प्रस्तुत पाठ में अनेक अलंकारों का प्रयोग किया गया है। कौन से अलंकार किन पंक्तियों में प्रयोग किये गये है, सूची बनाइये।

गतिविधि – 3

दोहा और चौपाई के वाचन का एक पारंपरिक ढंग है। लय सहित इनके वाचन का अभ्यास कीजिए।

गतिविधि – 4

कक्षा के छात्रों को चार या पांच समूहों में बांटकर प्रत्येक समूह से इस प्रसंग की नाट्य प्रस्तुति कराई जायेगी।

गतिविधि – 5

कक्षा में दो–दो छात्रों के युग्म बनाकर निम्न विषयों में से किसी एक पर इस प्रसंग का संवाद लेखन कराया जाएगा।

1. राम – परशुराम के मध्य संवाद
2. लक्ष्मण – परशुराम के मध्य संवाद
3. विश्वामित्र – परशुराम के मध्य संवाद

अधिगम प्रतिफल –

1. छात्रों को दोहा और चौपाई छंदों का ज्ञान है।
2. छात्र क्रोध के नकारात्मक स्वरूप के दुष्परिणामों से परिचित है।
3. छात्र गुरूजनों के प्रति शिष्ट एवं संयत व्यवहार रखते हैं।
4. छात्रों को पौराणिक पात्र राम के जीवन के विभिन्न प्रसंगों का ज्ञान है।

कार्य प्रपत्र –

नीचे दिये गये विषयों में से किसी एक विषय पर संवाद लेखन कीजिए –

1. माता पिता तथा बालक के बीच संवाद, गुरूशिष्य के बीच संवाद, डॉक्टर–मरीज और मालिक–नौकर के बीच संवाद।

छाया मत छूना

(गिरिजाकुमार माथुर)

पाठपरिचय –

प्रस्तुत कविता गिरिजाकुमार माथुर की प्रसिद्ध रोमानी कविता है। नई कविता के प्रमुख कवियों में से एक गिरिजाकुमार माथुर विषय की मौलिकता के साथ शिल्प के सौंदर्य को बनाए रखने वाले कवि है। उनकी कविताओं में अनुभूति की गहराई मिलती है। मूर्त के चित्रण के द्वारा अमूर्त भावों का बोध कराने में वे सिद्धहस्त है। उनकी इस कविता में जहाँ जीवन का यथार्थ है, वहीं सौंदर्य–बोध का भावपूर्ण चित्रण भी पूर्ण प्रवाहमयता के साथ विद्यमान है। इस कविता में उन्होंने भावानुरूप भाषा का प्रयोग किया है। तत्सम और कोमल सरल शब्दों के साथ संगीतात्मकता, बिंब विधान, प्रतीक योजना का प्रयोग इस कविता में विशिष्ट है।

पाठ को बोधगम्य, सरल बनाने हेतु शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण काव्यांशों से संबंधित कुछ निर्देशित बिंदु –

1. इस कविता का मूल संदेश है कि पुरानी मधुर स्मृतियों को याद करते रहने से वर्तमान का दुख और भी बढ़ जाता है। जीवन में सुख और दुख दोनों की उपस्थिति होती है। विगत के सुख को याद कर वर्तमान के दुख को और गहरा करना उचित नहीं है। बीते हुए कल की सुखद कल्पना को छोड़कर वर्तमान के कठिन यथार्थ का सामना करना ही जीवन को प्राथमिकता होनी चाहिए। कवि अतीत की स्मृतियों को भूल कर वर्तमान का सामना कर भविष्य वरण करने का संदेश देता है। जीवन के कठोर सत्य को छोड़कर उसकी छायाओं से भ्रमित रहना जीवन की कठोर वास्तविकताओं से दूर रहना है।

2. **'जीवन में हैं ....जीवित क्षण'**

कवि के अनुसार जीवन में बहुत सी रंग–बिरंगी सुंदर सी यादें हैं। उन सुंदर चित्रों की यादों

के साथ उसके आस–पास मन को भाने वाली गंध भी फैली हुई है। अर्थात प्रेमिका/प्रेयसी के आकर्षक रूप–सौंदर्य के चित्र के साथ उसकी मनमोहक गंध की याद भी मन को मोहने वाली है। तारों भरी रात अब बीत चुकी है अब उसके तन की सुगंध ही शेष रह गई है। प्रेयसी के बालों में लगे फूलों की याद ही चांदनी बनकर उसे भ्रमित कर रही है। अर्थात सुखद समय अब बीत चुका है। अब तो प्रेयसी की चांदनी जैसी मधुर यादें ही बाकी रह गई हैं। उन बीते हुए लम्हों का भूलकर किया गया एक स्पर्श भी उन सुखद क्षणों की यादों को ताज़ा कर देता है। अर्थात यदि विगत सुखों को थोड़ा भी याद करने का प्रयास किया गया तो पुरानी यादें सजीव हो जाएंगी।

3. यश है या न वैभव .... तू कर पूजन

कवि के अनुसार यश, ऐश्वर्य (धन दौलत), सम्मान, पूंजी कुछ भी स्थिर नहीं है। इन सबके पीछे तुम जितना भागते हो उतने ही भ्रमित होते रहे। महानता प्राप्त करने का एहसास मृगतृष्णा की भांति है। अर्थात जिस प्रकार प्यासा मृग रेगिस्तान में पानी के भ्रम में निरंतर भागता रहता है, पर उसे पानी नहीं मिलता उसी प्रकार व्यक्ति महान बनने का निरंतर प्रयास करता रहता है किंतु उसके महान बनने की इच्छा कभी समाप्त नहीं होती। कवि के अनुसार प्रत्येक चांदनी रात के पीछे एक काली अंधियारी रात भी छिपी है, अर्थात हर सुख के साथ दुख भी जुड़ा है। अतः वर्तमान की जो सच्चाई है यथार्थ है, भले ही वह कठिन है, कठोर है, उसकी पूजा करो अर्थात कटु यथार्थ का सामना करो।

4. दुविधा–हत साहस है..................................तू भविष्य वरण

कवि के अनुसार मन में दुविधा के कारण साहस समाप्त हो चुका है। रास्ता दिखाई नहीं दे रहा। यद्यपि शरीर सुखी भी है, तब भी मन के दुखों का कोई अंत नहीं है। उसे इस बात का भी दुख है कि शरद रात के आने पर आकाश में चांद नहीं उदित हुआ अर्थात् जिस समय उसे उपलब्धि की आशा थी वह उस समय प्राप्त नहीं हुआ। किंतु कवि कहता है कि आनंददायक वसंत बीत जाने के बाद फूल खिलता है अर्थात उसे उपलब्धि बाद में मिल जाए तो तब भी हमें उसका आनंद उठाना चाहिए। जीवन में जो उपलब्धि हमें नहीं मिली उसका दुख भूलकर, वर्तमान का सामना कर, भविष्य संवारने में जुट जाओ।

भाषागत विशेषताएं –

तत्सम शब्द – सुरंग, यामिनी, उत्तल, वैभव, प्रभुता, चंद्रिका, कृष्ण, यथार्थ, पंथ, यश, वैभव, दुविधा, शरद, वरण आदि।

कोमल व सरल शब्द – दूना, सुहावनी, मनभावनी, छुअन, भरमाया आदि

अलंकार

छाया मत छूना – अनुप्रास अलंकार

सुरंग सुधियां सुहावनी – अनुप्रास अलंकार

चित्रगंध – रूपक अलंकार

तन–सुगंध – रूपक अलंकार

प्रतीक – 'छाया' विगत सुखों की स्मृति का प्रतीक है।

महत्वपूर्ण पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर –

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण–बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन –
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

प्रश्न –

1. मनुष्य यश, वैभव, मान, पूँजी के पीछे क्यों पड़ा रहता है?
2. 'मृगतृष्णा' का प्रयोग काव्यांश में किस अर्थ में हुआ है?
3. 'हर चंद्रिका' में छिपी एक रात कृष्णा है के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
4. कवि कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों करता है?
5. 'यथार्थ' शब्द का विलोम शब्द लिखिए।

(अध्यापक इसी प्रकार अन्य काव्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर का अभ्यास विद्यार्थियों से करवाएं)

गतिविधियाँ / क्रियाकलाप –

1. छात्रों को काव्यांश का उचित लय, गति, अनुतान के साथ सस्वर वाचन के लिए कहें। अर्थ बिल्कुल न बताएं। अब छात्रों को काव्याशं पढ़कर जो भी समझ आता है उसे बोलने अथवा लिखने को कहें। यह कार्य समूह में बांटकर भी करवाया जा सकता है।
2. कक्षा को समूहों में बांटकर प्रत्येक समूह को काव्य की दो–दो पंक्तियां दें। एक समूह उन पंक्तियों को पढ़कर सुनाएगा एवं दूसरा समूह उनका भावार्थ बताएगा। इस प्रक्रिया को अन्य समूहों में भी दोहराएं।
3. एक बॉक्स में कविता में आए महत्वपूर्ण शब्दावलियों की चिटें बनाकर रख ली जाएं तथा प्रत्येक छात्र को आमंत्रित करते हुए उनसे एक–एक चिट निकलवाकर उनके अर्थ बोलने या लिखने को कहा जाए।
4. अपने जीवन से जुड़ी कोई भी विगत स्मृतियों को 100 शब्दों के एक अनुच्छेद में लिखने को कहा जाए।
5. 'छाया' शब्द से माइंड मैपिंग करवाया जा सकता है।
6. छात्रों को तत्सम शब्दों, अलंकारों आदि को छांटने के लिए कहा जा सकता है।
7. छात्रों से स्वरचित कविताएं लिखने अथवा सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

आकलन –

(पाठ को विद्यार्थियों ने आत्मसात किया या नहीं इसका आकलन करने हेतु प्रत्येक विद्यार्थी से निम्न प्रकार के संक्षिप्त प्रश्न पूछकर उन्हें चिह्नित करें, जिन्हें पाठ समझ में आ गया और अपेक्षाकृत कमजोर छात्रों को सरलीकृत प्रश्न दें।)

1. प्रस्तुत कविता के लेखक कौन है?
2. इस कविता में 'छाया' शब्द का अर्थ क्या है?
3. 'सुरंग सुधियां' शब्द का क्या अर्थ है?
4. 'सुरंग सुधियां' में कौन सा अलंकार है?
5. 'गंध' शब्द में दो उपसर्ग लगाकर नए शब्द बताइए?
6. 'छवियों की चित्र–गंध' से कवि का क्या तात्पर्य हैं?

7. कवि को अपने जीवन के कौन–कौन से क्षण याद आ रहे हैं?

8. 'कुंतल के फूलों की याद बनी चांदनी' कहकर कवि क्या बताना चाहता है?

9. 'मृगतृष्णा' का क्या अर्थ होता है?

10. इस काव्य में 'मृगतृष्णा' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया गया है?

11. कविता से पांच तत्सम शब्द चुनकर बताइए।

12. 'प्रभुता का शरण बिंब' से कवि का क्या आशय है?

13. 'कोई मार्ग दिखाई नहीं देता' कवि ने ऐसा क्यों कहा?

14. साहस की मृत्यु अर्थात साहस की समाप्ति किस कारण से होती है?

15. कवि ऐसा क्यों कहता है कि देह सुखी हो, पर मन के दुख का अंत नहीं?

16. कवि भविष्य का वरण करने की सलाह क्यों देता है?

17. कवि को किस बात का दुख है?

18. कवि बीते हुए सुख को याद क्यों नहीं करना चाहता?

कार्य प्रपत्र –

1. 'छाया' शब्द के पांच अर्थ लिखिए –

क) .... ख) .... ग) ....

घ) .... ङ) ....

2. निम्नलिखित शब्दों के तुक मिलाइए –

	I	II
क)	सुहावनी	कृष्णा
ख)	यामिनी	चाँदनी
ग)	सरमाया	मनभावनी
घ)	मृगतृष्णा	भरमाया

3. निम्नलिखित वाक्यांशों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए –

क) 'सुरंग सुधियां सुहावनी' ....

ख) 'छाया मत छूना, होगा दुख दूना' ....

ग) 'चित्र गंध फैली मनभावनी' ....

घ) 'क्या हुआ जो खिला फूल रस–बसंत जाने पर' ....

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए –

क) सुरंग – सुधियाँ ....

ख) यामिनी ....

ग) सरमाया ....

घ) भरमाया ....

ङ) प्रभुता का शरण बिंब ....

च) मृगतृष्णा ....

छ) चंद्रिका ....

ज) कृष्णा ....

झ) यथार्थ ....

ञ) पंथ ....

ट) वरण ....

अधिगम प्रतिफल –

1. छात्र कविता के मूल कथ्य/संदेश को बताते हैं।
2. छात्र अपने अन्तर्मन में जनित अमूर्त भावों की अभिव्यक्ति करते हैं।

3. कविता में आए तत्सम, कोमल सरल शब्दों की पहचान करते हैं।
4. कविता में प्रयुक्त अलंकारों को बताते हैं।
5. कवि के भाषिक सौंदर्य की विशेषताओं को बताते हैं।

माइंड मैपिंग गतिविधि

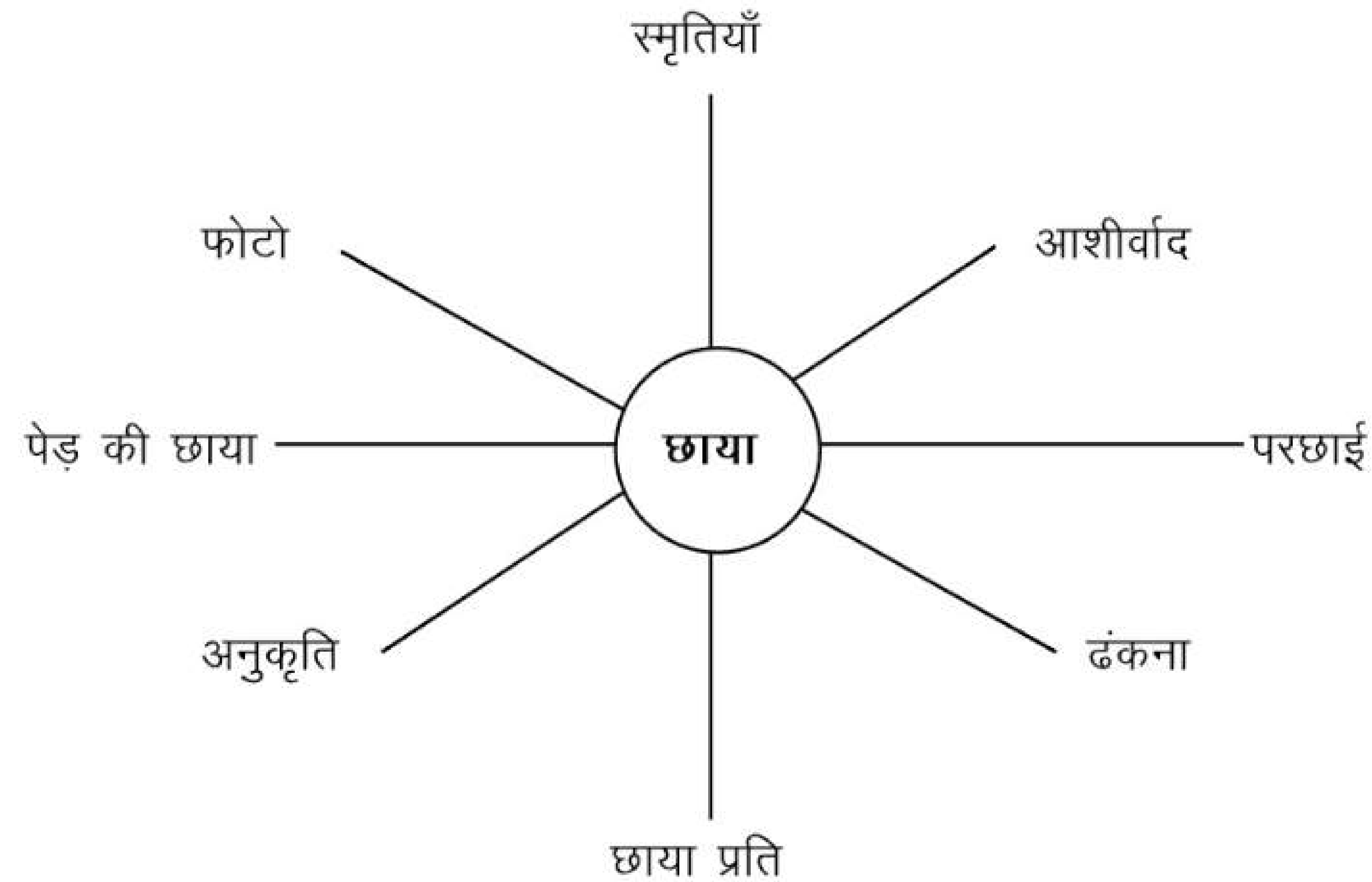

अध्यापक उपरोक्त प्रकार से कविता में आए अन्य नवीन शब्दों से भी माइंड–मैपिंग करा सकते हैं। यह गतिविधि व्यक्तिगत भी हो सकती है तथा सामूहिक भी। कक्षा को समूहों में बांटकर प्रत्येक समूह को अलग–अलग शब्द देकर माइंड–मैपिंग करवाई जा सकती है तथा प्रत्येक समूह से उनका प्रस्तुतीकरण करवाया जा सकता है।

संगतकार

(मंगलेश डबराल)

पाठ का सार –

'संगतकार' कविता में मुख्य गायक के सहयोगी वाद्यकार के महत्व को प्रस्तुत किया है जो मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाकर उसके स्वर को गति प्रदान करता है। जिस समय मुख्य गायक संगीत की कठिन तानों में भटक जाता है उस समय संगतकार ही उस अंतरा की तान को पहचान कर, उसे गाकर स्थिति को संभाल लेता है। इस प्रकार संगतकार हमेशा ही मुख्य गायक की आवाज में अपनी सुंदर और कांपती आवाज मिलाता आया है। संगतकार का विशेष दायित्व है कि वह मुख्य के पीछे छुटे हुए सामान को स्वयं समेटता हुआ चलता है।

संगतकार का महत्व केवल मुख्य गायक की सहायता करने के कारण ही नहीं अपितु मानवीय गुणों के कारण भी उसका महत्व है। मुख्य गायक का स्वर तार सप्तक तक पहुंचने पर कभी कभी बिखर जाता है या मुख्य गायक की आवाज को बल देकर उसका आत्मविश्वास बनाए रखता है। वह मुख्य गायक को अपना आराध्य मानता है इसलिए अपनी आवाज को ऊँची नहीं करता। यह उसकी विफलता नहीं है अपितु उसकी मनुष्यता है। यह उसके त्याग का प्रतीक है।

लेखक परिचय –

1. प्रसिद्ध पत्रकार से साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त मंगलेश डबराल ने टिहरी गढ़वाल (उत्तरांचल) की पुण्य भूमि पर जन्म लिया। जनसत्ता, सहारा समय और पूर्वग्रह का संपादन कार्य किया।

2. चार कविता संग्रह – पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते है और आवाज भी एक जगह है।

3. इनकी कविताओं में पूंजीवाद के प्रति आक्रोश, अभिव्यक्ति के नए प्रयोग है। गद्यात्मक मुक्त छंद तथा अनुभूति की छटा दर्शनीय है।

4. भाषा सरल और सहज हैं यदा कदा कविता में व्यंग्य भी है। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग।

महत्वपूर्ण चरित्र –

संगतकार वह व्यक्ति है जो कदम–कदम पर मुख्य गायक का साथ देता है। स्वयं ऊँचा गाकर वह मुख्य गायक के प्रभाव को कम नहीं करना चाहता। उसमें मुख्य गायक के प्रति श्रद्धा है। संगतकार में त्याग की भावना है जो निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

काव्यांश –

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर कांपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज़ में
वह अपनी गूंज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लांघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।

प्रश्न –

1. मुख्य गायक का स्वर भारी होने पर उसका साथ कौन देता है?
2. मुख्य गायक और संगतकार में कैसा रिश्ता होता है?
3. मुख्य गायक के स्वर में भटकाव आने पर कौन उसका साथ देता है?
4. संगतकार मुख्य गायक को क्या याद दिलाता है?
5. प्राचीनकाल से संगतकार क्या मिलाता आया है?

गतिविधियां –

1. कक्षा में दो समूह बनाकर समूह गान प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है जिसमें कोई गीत गाने हेतु एक छात्र तथा संगतकार के रूप में अन्य छात्र समूह गाना गाते समय मुख्य गायक और संगतकार का भेद जान सकते हैं।
2. छात्रों से संगतकार के गुणों की सूची बनवायी जा सकती है।
3. विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम को छात्र आनंद प्राप्ति हेतु अवश्यक देखते हैं। कार्यक्रम में किसी एक प्रस्तुति के लिए मुख्य गायक और सहयोगी की सूची बनाई जा सकती है।
4. किसी फिल्म के गाने को गाकर उसके मुख्य गायक और संगतकार अन्य सहायक गायक कौन है? अभ्यास कराया जा सकता है?

आकलन –

1. संगतकार किसे कहते है?
2. मुख्य गायक का संगतकार से कैसा संबंध होता है?
3. मुख्य गायक की आवाज कैसी होती है?
4. संगतकार के स्वर की क्या विशेषता है?
5. संगतकार प्राचीन काल से क्या मिलाता आया है?
6. मुख्य गायक के स्वर भटकने पर स्थायी कौन संभालता है?
7. संगतकार मुख्य गायक को क्या याद दिलाता है?

8. संगतकार क्या समेटता सा लगता है?

9. संगतकार अपने स्वर की सहायता से मुख्य गायक को क्या बताना चाहता है?

10. संगतकार के माध्यम से कवि कैसे व्यक्तित्व की ओर इशारा करना चाहता है?

11. आप मुख्य गायक और संगतकार में से कौन सी भूमिका करना चाहेंगे?

12. संगतकार कविता में कवि क्या संदेश देना चाहता है?

अधिगम प्रतिफल –

1. छात्र कविता को शुद्ध उच्चारण, लय गति, आरोह–अवरोह आदि के साथ पढ़ते है।
2. वे संगतकार प्रतीक के माध्यम से परोपकार और त्याग आदि जीवन मूल्यों का विकास करते हैं।
3. वे प्रतीक, अलंकार आदि के बारे में जानते है।
4. वे व्यक्तिगत अनुभूति और संवेदना से परिपूर्ण सहयोग की भावना आत्मासात् करते है।

कार्य प्रपत्र –

1. रेखांकित पंक्ति में अलंकार छांटकर लिखिए –

   मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती

   वह आवाज सुंदर <u>कमजोर कांपती</u> हुई थी।

   ....

   ....

2. 'संगतकार' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

   ....

   ....

3. कविता में 'सरगम' शब्द प्रयोग हुआ है, इसमें समाहित सात स्वरों के नाम लिखिए।

   ....

   ....

4. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत क्षेत्र के अलावा और किस क्षेत्र में दिखाई देते हैं? लिखिए।

....

....

5. कविता में प्रयुक्त संगतकार, मनुष्यता और रिश्तेदार शब्द में से प्रत्यय और मूल शब्द अलग करके लिखिए।

....

....

लखनवी अंदाज

पाठ का परिचय –

इस पाठ का आधार व्यंग्य है किंतु इसकी रचना, कहानी, यात्रा, संस्मरण आदि विशेषताओं से युक्त है। इस रचना का लेखक भीड़ से बचने के लिए 'सेकंड क्लास' का रेल टिकट खरीद कर चढ़ता है। लेकिन रेल के डिब्बे में चढ़कर पता चलता है कि वहां कोई लखनऊ की नवाबी मुद्रा में एक सफेद–पोश सज्जन पालथी मार बैठे हैं। लेखक के सहसा पहुंच जाने से उनके एकांत में बाधा उत्पन्न हो रही है। नवाब साहब थोड़ी देर बाद लेखक को खीरे खाने का प्रस्ताव देते हैं। जिसे लेखक विनम्रता से अस्वीकार कर देता हे।

नवाब साहब बहुत करीने से खीरे को काटते हैं। उस पर नमक और लाल–मिर्च बुरकते हैं। उनमें इस अंदाज़ से लेखक अनुमान लगाता है कि मियां बनते तो रईस हैं, पर लोगों की नज़रों से बच सकने के ख्याल से अपनी असलियत पर उतर आये हैं। नवाब साहब ने एक बार फिर लेखक से कहा – 'शौक फरमाइए लखनऊ का बालम खीरा है।' लेखक मना कर देता है।

रचना अपने महत्वपूर्ण सोपान पर तब पहुंचती है। नवाब साहब खीरे की फांकों का नाक के पास ले जाकर, वासना रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते हैं और आखिरी में लेखक को इस बात को जान कर हैरानी होती है कि नवाब साहब को तृप्ति की डकार भी आती है।

लेखक परिचय –

- जन्म पंजाब के फिरोजपुर में 1903 में।
- क्रांतिकारी धारा से जुड़ाव तथा इसके लिए जेल भी गए।
- जीवन की सच्चाई को अपनी रचनाओं का आधार बनाते हैं।
- सामाजिक विषमता और राजनैतिक पाखंड और रूढ़ियों के विरुद्ध इन्होंने अपनी लेखनी को मुखर रखा।

महत्वपूर्ण चरित्र –

इस रचना में लेखक के अतिरिक्त एक ही चरित्र है, वह है नवाब साहब का।

नवाब साहब के चरित्र की विशेषताएं –

- नवाब साह का चरित्र एक सनकी व्यक्ति का दिखाया है जो अपनी शान दिखाने के लिए खीरे को सूंघकर ही रेलगाड़ी के बाहर फेंक देते हैं। जिससे इनकी छवि खानदानी रईस, तहज़ीबदार, नफासत और नज़ामत वाले इंसान की बने।
- उन्हें एकांत प्रियता पसंद है। तभी लेखक के डिब्बे में आने के बाद उनके चेहरे के भाव भी बदल जाते हैं।
- नवाब साहब को दिखावा बहुत पसंद है। तभी वे दो बार लेखक को खीरे की पेशकश करते हैं। जिसे बाद में सूंघ कर खिड़की से बाहर फेंक देते हैं।

गद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर –

गाड़ी छूट रही थी। सेकंड क्लास के एक छोटे डिब्बे की जाली समझकर ज़रा दौड़कर उसमें चढ़ गए। अनुामन के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था। एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। सामने दो ताज़े–चिकने खीरे तौलिये पर रखे थे। डिब्बे में हामरे सहसा कूद जाने से सज्जन की आंखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया। सोचा, हो सकता है यह भी कहानी के लिए सूझ की चिंता में हो या खीरे–जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हों।

नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया। हमने भी उनके सामन की बर्थ पर बैठकर आत्म सम्मान में आंखें चुरा ली।

3.1 उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. लेखक ने गाड़ी में सेकंड क्लास को ही यात्रा के लिए क्यों चुना ?
2. डिब्बे में लेखक ने ऐसा क्या देखा कि उन्हें अपने अनुमान/सोच के विपरीत लगा?
3. 'सफेदपोश' शब्द से क्या अभिप्राय निकलता है?
4. नवाब साहब ने लेखक की संगति के प्रति उत्साह क्यों नही दिखाया ?

नवाब साहब ने सतृष्ण आंखों से नमक–मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फांकों की ओर देखा। खिड़की बाहर देखकर दीर्घ निश्वास लिया। खीरे की एक फांक उठाकर होंठों तक ले गए। फांक को सूंघा। स्वाद के आनंद में पलकें मुंद गईं। मुंह में भर आए पानी का घूंट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फांक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फांकों को नाक के पास ले जाकर, वासना रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. खीरे की फांकों को नवाब साहब ने खिड़की से बाहर क्यों फेंक दिया?
2. 'वासना से रसास्वादन' का अर्थ क्या है?
3. 'निश्वास' में कौर सा उपसर्ग है।
4. 'प्यासी' शब्द के विकल्प रूप में कौन सा शब्द उपर्युक्त गद्यांश में प्रयोग किया गया है?
5. नवाब साहब की पलकें खीरा सूंघ कर क्यों मुंद गईं?

शिक्षण गतिविधियाँ –

4.1 भाषिक गतिविधि क्विज़ / प्रश्नोत्तरी

प्रथम चरण : कक्षा / छात्रों को तीन वर्गों में बांट कर एक–एक पृष्ठ पढ़ने को कहें।

दूसरा चरण : फिर उर्दू के शब्दों को अलग करवाएं।

तीसरा चरण : प्रत्येक समूह से एक छात्र अपने पृष्ठ के शब्दों में से एक शब्द छांट कर उसको बोलेगा।

चौथा चरण : अब दोनों में से जिस समूह की बारी होगी वह समूह उसका अर्थ बतायेगा।

(इस तरह यह गतिविधि भाषिक विस्तार प्रश्नोत्तरी की तरह रोचक होने के साथ–साथ भाषा को पकड़ने की क्षमता का भी विस्तार करेगी।)

4.2 प्रश्न निर्माण

इस पाठ के आधार पर छात्रों को कम से कम 40 संक्षिप्त प्रश्न निर्माण की गतिविधि करवाई जा सकती है। जिसे छात्र आपस में मिल–जुल कर भी कर सकते हैं।

4.3 भाव विस्तार

बिना विचार, घटना और पात्रों के लेखक की इच्छा मात्र से 'नयी कहानी' क्यों नहीं बन सकती है? पाठ के अंत में दी इस टिप्पणी को ध्यान से पढ़ें, विचार और चिंतन करें?

1. क्या आपने कभी बिना चरित्र/पात्र की कहानी सुनी है? यदि हां तो औरों को भी सुनायें।
2. क्या केवल बातचीत के आधार पर ही कहानी को लिखा जा सकता है। कोई उदाहरण याद आया या अपनी तथा अपने साथी की बातचीत को लिख, कहानी का रूप दीजिये।

5. आकलन –

- इस रचना को पढ़ने के उपरांत छात्रों में व्यंग्य के हिस्से/शब्द/भाव को पकड़ने की क्षमता का विकास करना।
- उर्दू भाषा के शब्दों के प्रति समझ का भाव पैदा करना।
- परिस्थितियों और व्यक्तियों के अनुरूप उन्हें समझने की स्थितियां पैदा करना।

6. अधिगम प्रतिफल –

- छात्र यात्रा में होने वाले उतार–चढ़ाव से परिचित होते हैं।
- छात्रों में अलग–अलग परिवेश के व्यक्तियों की आदतों के साथ रहने का कौशल विकसित होता है।
- छात्र व्यंग्य के भाव को समझते हैं
- छात्र 'झूठी शान' की अनावश्यकता पर बातचीत करते हैं।

7. कार्य प्रपत्र –

नवाब साहब ने फिर एक पल खिड़की से बाहर देखकर गौर किया और दृढ़ निश्चय खीरों के नीचे रखा तौलिया झाड़कर सामने बिछा लिया। सीट के नीचे से लोटा उठाकर दोनों खीरों को खिड़की से बाहर धोया और तौलिए से पोंछ लिया। जेब से चाकू निकाला। दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला। फिर खीरों को बहुत एहतियात से छीलकर फांकों को करीने से तौलिए पर सजाते गए।

लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचनें वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं। ग्राहक के लिए जीरा–मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाज़िर कर देते हैं। नवाब साहब ने बहुत

करीने से खीरे की फांकों पर जीरा–मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। उनकी प्रत्येक भाव–भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से स्पष्ट था कि उस प्रक्रिया में उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लावित हो रहा था।

उपर्युक्त गद्यांश को ध्यान से पढ़ कर निम्नलिखित गतिविधि को पूर्ण कीजिए –

'खीरे को बहुत एहतियात से छीलकर फांकों को करीने से तौलिए पर सजाते गए।' इस पंक्ति में रेखांकित शब्दों का विकल्प लिखिए –

1. ....

2. ....

'मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लवित हो रहा था।' रेखांकित शब्दों से अन्य दो वाक्यों का निर्माण करें –

क) i) ....

ii) ....

ख) i) ....

ii) ....

3. उपर्युक्त गद्यांश के प्रत्येक वाक्य को सरल भाषा में लिखिए –

i) ....

ii) ....

iii) ....

iv) ....

v) ....

एक कहानी यह भी

(मन्नू भंडारी)

पाठ सार –

अपने आत्मकथ्य में मन्नू भंडारी ने उन व्यक्तियों और घटनाओं के विषय में लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से संबंद्ध रहे हैं। संकलित अंश में मन्नू भंडारी के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिता जी सुख सम्पतराय और उनके कॉलिज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष रूप से सामने आया है, जिन्होंने लेखिका के व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पाठ में लेखिका ने एक साधारण लड़की में आजादी की लड़ाई में भागादारी, उत्साह, ओज, संगठन क्षमता और विरोध करने के ढंग का प्रभावपूर्ण उल्लेख किया गया है।

लेखिका ने व्यक्त किया है कि उसका जन्म भानपुरा मध्य प्रदेश में हुआ। माता–पिता पहले इंदौर में रहते थे। जहां उनकी आर्थिक दशा तथा समाजिक सम्मान चरम सीमा पर था लेकिन परिस्थितिवश उनका परिवार इन्दौर से अजमेर में आ गया। यहाँ आकर इनकी आर्थिक दशा निम्न स्तर पर थी। इनकी माँ अनपढ़ थी। पिता छात्रों को घर पर पढ़ाया करते थे। आर्थिक दशा बिगड़ने के कारण इनके पिता मन्नू की माँ पर क्रोध करते रहते थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और शक्की स्वभाव के थे।

गोरा रंग इनके पिता की कमजोरी थी जबकि मन्नू भंडारी का रंग काला था। इनकी बड़ी बहन सुशीला गोरी थी। अतः इनके पिता सुशील की हमेशा प्रशंसा किया करते थे। इनकी माता धैर्य और सहनशीलता में अद्वितीय थी जिसने जीवन में कभी कुछ नहीं मांगा। इसके बाद भी इनकी माँ मन्नू भंडारी की आदर्श माँ न बन सकी। लेखिका ने उस समय के पड़ोस–परिवार प्रेम का उल्लेख भी किया है। बचपन के खेलों का वर्णन किया है। इनके पिता जी मन्नू की योग्यता और क्षमता को रसोई तक ही रखना चाहते थे। इनके घर पर राजनैतिक पार्टी के लोगों की चर्चा तथा देशभक्त शहीदों की कुर्बानियों की चर्चा का इनके ऊपर अत्याधिक प्रभाव पड़ा।

कॉलेज में प्राध्यापिका शीला अग्रवाल की प्रेरणा से साहित्य संसार में प्रवेश किया। शरत, प्रेमचंद, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल भगवतीचरण वर्मा के साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। शीला अग्रवाल ने इनके जीवन को नई दिशाा देकर गति प्रदान की। 1946–47 स्वतंत्रता आंदोलन प्रभात फेरियां, हड़ताल, जुलूस और भाषणों में भाग लिया। कॉलेज के प्रधानाचार्य नाराज हुए लेकिन इनके पिता जी ने इनका समर्थन किया। इनके पिता जी दो मित्र डॉ. अम्बालाल ने मन्नू भंडारी द्वारा दिए गए भाषण की प्रशंसा मन्नू के पिता के समझ की ; इनकी सामाजिक छवि प्रतिष्ठित हुई।

कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल को मई 1947 में लड़कियों को प्रशासन के विरूद्ध भड़काने के आरोप में नोटिस दिया तथा थर्ड ईयर की कक्षा बंद कर दी गई। तीन छात्राओं का महाविद्यालय प्रवेश निषिद्ध किया गया। लेकिन मन्नू भंडारी के हुड़दंग (विरोध) के परिणाम स्वरूप कक्षा को पुनः अनुमति प्रदान की दी गई। इस प्रकार से छोटे शहर की लड़की ने अपनी संगठन क्षमता से सफलता प्राप्त कर एक संदेश दिया।

लेखिका परिचय –

i) हिंदी साहित्य जगत में प्रसिद्ध कहानी लेखिका मन्नू भंडारी में दिल्ली मिरांडा हाऊस में अध्यापन कार्य किया। हिंदी साहित्य अकादमी का 'शिखर सम्मान' राजस्थान संगीत–नाटक अकादमी पुरस्कार तथा उ.प्र. हिंदी संस्थान से पुरस्कार प्राप्त है।

ii) इनकी कहानी त्रिशंकू, उपन्यास, आपका बंटी और महाभोज प्रसिद्ध है।

iii) मन्नू भंडारी सिद्धहस्त कथाकार तथा नई कहानी की मिसाल है।

iv) मन्नू भंडारी की शैली सरल सहज तथा भाव भिव्यक्ति से परिपूर्ण है। संवाद प्रसंगानुकूल तथा उर्दू, अंग्रेजी तथा देशज शब्दों का प्रयोग प्राप्त होता है।

महत्वपूर्ण चरित्र –

मन्नू भंडारी अपने परिवार में उपेक्षित जीवन यापन करते हुए भी उच्च आदर्शों के साथ दृढ़ प्रतिज्ञ होकर प्रगति पथ पर आगे बढ़ती गई। घर पर पिता द्वारा उपेक्षा का भाव, आर्थिक पीड़ा कॉलेज में संघर्ष करते हुए भी देश को आजादी दिलाने हेतु प्रभात फेरी निकालना, हड़ताल में भाग लेना, जुलूस निकालना तथा आजादी हेतु भाषण देने का कार्य किया। लेखिका एक कुशल संगठन क्षमता संपन्न तथा नेतृत्व के गुण सम्पन्न है।

प्रमुख गद्यांश –

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी लिखी माँ धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति

थी। शायद उनमें पिता जी की हर ज्यादती को अपना प्राप्त और बच्चों को हर उचित अनुचित फरमाइश और ज़िद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं। वे उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ मांगा नहीं, चाहा नहीं...... केवल दिया ही दिया। हम भाई बहनों का सारा लगाव माँ के साथ था। लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका......न उनका त्याग न उनकी सहिष्णुता। खैर जो भी हो, अब यह पैतृक–पुराण समाप्त कर अपने पर लौटती हूँ।

i) लेखिका ने पिता की अपेक्षा माता के गुणों में क्या अंतर था?

ii) मन्नू भंडारी की माँ अपना कर्त्तव्य किसे समझती थी?

iii) माँ का त्याग और उसकी सहिष्णुता को लेखिका ने अपना आदर्श क्यों नहीं माना?

iv) पैतृक–पुराण का अर्थ लिखिए।

v) लेखिका की माँ के चारित्रिक गुणों को लिखिए।

गतिविधियाँ –

i) छात्रों को दो वर्ग समूह में विभाजित करके पाठ में प्रयुक्त मुहावरों पर चर्चा करना। एक वर्ग पाठ में से मुहावरें छांटकर बोलेगा तथा दूसरा समूह मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करेगा।

ii) समूह आधारित वाद–विवाद प्रतियोगिता, देश भक्त शहीदों पर चर्चा तथा राजनैतिक वातावरण पर विचार गोष्ठी की जा सकती है।

iii) समूह आधारित आशु भाषण–भाषण कराया जा सकता है।

iv) समूह अनुसार एक वर्ग संधि, दूसरा प्रत्यय (पाठ में प्रयुक्त शब्द) की सूची तैयार कर सकता है।

आकलन –

प्रश्नों द्वारा छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि पाठ को पढ़नें के परश्चात् उनमें निराशा के क्षणों में भी आशावादी दृष्टिकोण उत्पन्न रहेगा। वे जीवन के संघर्षों में किस प्रकार धैर्य, लग्न, परिश्रम, उत्साह और नेतृत्व क्षमता द्वारा सफलता प्राप्त करें। इन कौशलों का ज्ञान अवश्य हो गया होगा। निम्नलिखित प्रश्नों द्वारा भी आकलन किया जा सकता है।

1. लेखिका के जीवन पर किन–किन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा?
2. गरीबी के कारण मनुष्य के स्वभाव परिवर्तन कैसे आ जाते हैं?
3. परिवारजनों की उपेक्षा व्यक्ति में क्या परिवर्तन करा सकती है?
4. मनुष्य के जीवन में अच्छे पड़ोस का क्या महत्व है?
5. महानगरों में फ्लैट कल्चर के दोष क्या हैं?
6. एक कहानी यह भी का क्या संदेश है?
7. लेखिका की माँ त्याग, धैर्य से युक्त होने पर लेखिका के लिए आदर्श क्यों नही बन सकी। क्यों?
8. लेखिका के पिता का स्वभाव कैसा था?
9. लेखिका के मन में हीन भावना पनपने का क्या कारण था?
10. लेखिका के बचपन में खेले जाने वाले खेलों का परिचय दीजिए।
11. लेखिका के जीवन में शीला अग्रवाल की प्रेरणा का क्या प्रभाव पड़ा?
12. डॉ. अंबालाल के द्वारा की गई प्रशंसा को लेखिका ने स्नेह क्यों कहा?

अधिगम प्रतिफल –

i) पाठ के अध्ययन के उपरांत छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि उनमें जीवन कौशल का ज्ञान विकसित हो। संघर्ष में निराश न होने की मानसिकता प्रबल होती है।

ii) स्वजन या परिजनों द्वारा किए गए तिरस्कार से हीन भावना उत्पन्न न होकर अधिक उत्साह के साथ कार्य करने की क्षमता विकसित होती है।

iii) जीवन में खेल अनिवार्य हैं, जिससे हमें ऊर्जा प्राप्त होती है। अतः वे खेल को जीवन का अंग बनाने की इच्छा शक्ति दिखाते हैं।

iv) शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित होते हैं।

v) वे पाठ में प्रयुक्त उपसर्ग, प्रत्यय, क्रिया विशेषण, समास तथा मुहावरों को प्रयोग करते हैं।

कार्य प्रपत्र –

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए –

    i) 'महत्वाकाक्षाएँ' संधि विच्छेद कीजिए।

    ii) 'महानगर' का विशेषण रूप लिखिए।

    iii) एक साल पहले ही कॉलेज बना था और वह इसी साल नियुक्त हुई थी। रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए।

    iv) 'मुंह दिखाने लायक न रखना' मुहावरे का अर्थ लिखकर प्रयोग कीजिए।

    v) लेखिका हड़तालें करवाती थी। इस वाक्य में 'करवाती' शब्द में कौन सी क्रिया है? लिखिए।

2. मन्नू भंडारी के चारित्रिक गुण कौन–कौन से हैं? लिखिए।

    ....

3. बचपन में खेले जाने वाले खेलों की सूची बनाओ।

    ....

4. छात्र जीवन में छात्र विद्यालय में कैसा परिवेश चाहते हैं?

    ....

5. पाठ में प्रयुक्त उर्दू शब्दों को लिखिए जैसे 'ओहदा'।

    ....

‘जार्ज पंचम की नाक’

(कृतिका)

लेखक परिचय –

पूरा नाम	–	कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना
जन्म काल एवं स्थान	–	06 जनवरी 1932 में जनपद मैनपुरी, उत्तरप्रदेश
तिरोभाव (मृत्यु)	–	27 जनवरी 2007 को दिल का दौरा पड़ने से फरीदाबाद हरियाणा में
उम्र	–	75 वर्ष
शिक्षा	–	एम.ए. हिन्दी साहित्य – इलाहाबाद विश्व विद्यालय से

कमलेश्वर जी ने हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओं में अपना योगदान दिया है, अर्थात लेखन कार्य किया है, जैसे उपन्यास लेखन, आलोचक, उपन्यास एवं कहानी लेखन, फिल्म पटकथा लेखन आदि। इन्हें हिंदी साहित्य जगत में नयी कहानी आंदोलन का अगुआ माना जाता है।

इनकी प्रमुख रचनाएं इस प्रकार है – राजा निरवंसियां, खोई हुई दिशाएँ, सोलह छतों वाला घर, जिंदा मुर्दे (कहानी संग्रह) वही बात, आगामी अतीत डाक बंगला, काली आंधी कितने पाकिस्तान (उपन्यास)

इसके अतिरिक्त कमलेश्वर जी ने आत्मकथा, यात्रा वृतान्त और संस्मरण भी लिखे हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में द्रुतिगति से बदलते हुए समाज का बहुत ही मार्मिक एवं संवेदनशील चित्रण किया हे। इनके उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ ने इन्हें इतनी ख्याति दी कि आपको कालजयी साहित्यकार बना दिया।

आपने सारिका, दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर आदि कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन भी किया है।

इन्हें 'साहित्य अकादमी' एवं भारत सरकार के 'पद्मभूषण' से भी सम्मानित किया गया। साहित्य क्षेत्र में इनका योगदान सन् 1954 से 2006 तक अनवरत् रहा। इन्होंने लगभग 300 से अधिक कहानी लिखी है।

पाठ का सार –

एक बार इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ द्वितीय अपने पति के साथ पाकिस्तान, नेपाल और भारत के दौरे के लिए रवाना होने वाली थीं। उससे संबधित एक–एक जानकारियां इंग्लैंड के समाचार–पत्रों में छपने लगी थी। उनके बावर्चियों, अंगरक्षकों एवं दर्जी की चिंता की खबर भी पढ़ी गई। रानी के दिल्ली आने की तैयारी में दिल्ली की सड़कें सुधरने लगीं। इमारतें सजने लगी, नाक ऊँची रखने के लिए सभी तैयारियाँ जोर–शोर पर थीं। परंतु कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद इंडियागेट के सामने लगी जार्ज पंचम की मूर्ति की नाक गायब हो गई। इससे चिंतित भारतीय नेताओं एवं अधिकारियों की एक बैठक आहूत की गई और मूर्ति पर नाक लगाने का निश्चय किया गया। एक गरीब मूर्तिकार ने हिम्मत करके अवसर का लाभ उठाना चाहा और जिम्मेदारी ले ली। उसने मूर्ति के पत्थर की जानकारी के लिए पुरातत्व विभाग की फाइल्स खुलवाईं परंतु उसमें कुछ भी न मिलने के पुनः बैठक आहूत की गई। उसमें देश के पहाड़ों एवं खानों के पत्थरों से मूर्ति के पत्थर से मिलान किया परंतु उससे भी मिलान नहीं हुआ। पुनः सभा हुई। इस बार बैठक को गुप्त रखने का सुझाव मूर्तिकार द्वारा दिया गया और प्रस्ताव रखा गया कि देश के महापुरूषों की मूर्तियों की नाकों के नाप लिए जाएं और ठीक आने पर उतारकर लगा दी जाए।

घबराहट के बावजूद सभा ने इस प्रस्ताव को पास कर मूर्तिकार को इसकी अनुमति दे दी गई। परंतु पूरे देश में किसी भी महापुरूष की नाक की नाप सही नहीं बैठी। यहां तक कि सन् 1942 के आंदोलन में बिहार सचिवालय के सामने शहीद हुए बच्चों की मूर्तियों की नाकें भी जार्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली। रानी के आने का समय करीब आ रहा था, अतः अधिक हड़बड़ाहट में देश की नाक बचाने के लिए मूर्तिकार ने (देश भर के) 40 करोड़ आबादी वाले भारत के एक नागरिक की जीवित नाक लगाने का रास्ता सुझाया। कुछ देर के सन्नाटे के बाद आखिरकार इसकी भी अनुमति मिल ही गई और अखबार वालों को खबर दी गई कि जार्ज पंचम की नाक का हल निकल आया है। मूर्ति के आस–पास के तालाबों की सफाई करके ताजा पानी भरा गया। आखिरकार एक जिंदा नाक लगा दी गई। परंतु उस दिन न तो किसी के अभिनंदन, स्वागत समारोह या उद्घाटन की खबर छपी और न ही फोटो। इस तरह यह घटना भारत की असलियत को उद्घाटित करती है।

महत्त्वपूर्ण चरित्र/घटनाएँ

पाठ में लेखक ने व्यंजना शब्द शक्ति के प्रयोग द्वारा देश का चरित्र उभारने का प्रयास किया है एवं देश के सरकारी महकमों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कार्य शैली को उकेरने का प्रयास किया है। साथ ही साथ देश के राजनीतिज्ञों की सोच एवं देश की अस्मिता की उपेक्षा की शैली को उनके चरित्र के रूपक के रूपक में प्रस्तुत किया है। देश की बनावटी अस्मिता की रक्षा के लिए देश के चरित्र को ही परिवर्तित करने का प्रयास किया गया है।

इस पाठ में लेखक ने एक ऐसी काल्पनिक घटना को उल्लिखित करके यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि इस प्रस्ताव को पास करने वाले लोगों (अधिकारियों एवं राजनीतिज्ञों) को भी इस बात का अहसास है कि यह अनैतिक एवं देश के चरित्र को गिराने वाला फैसला है। इससे देश की जनता भी स्वीकार नहीं करेगी। इसीलिए इस निर्णय को गोपनीय रखा गया।

पाठ से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न –

1. रानी एलिजाबेथ किन–किन देशों का दौरा करने वाली थीं?
2. रानी एलिजाबेथ के पहले कौन भारत का दौरा करने वाले थे?
3. रानी के आगमन की तैयारी से दिल्ली पर क्या असर/परिवर्तन हुआ?
4. दिल्ली में अधिकारियों एवं नेताओं में अफरा तफरी क्यों मच गयी?
5. 'नाक' (मूर्ति की नाक) मान समान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात व्यंग रचना में किस तरह उभरकर आयी है?

शिक्षण प्रक्रिया एवं आकलन –

पाठ सारांश प्रस्तुत करते हुए पाठ के निष्कर्ष को बचाए रखें, जिससे बच्चों की अभिरूचि पाठ में जिज्ञासा के रूप में बनी रहे।

पाठ को अपनी सुविधा व छात्रों की क्षमतानुसार 3 या 4 अन्वितियों में विभाजित कर लिया जाए।

पाठ प्रारंभ के पूर्व छात्रों को उस मानसिक परिकल्पना की ओर ले जाने का प्रयास किया जाना चाहिए जिस परिस्थिति को साकार कर पाठ लिखा गया है। बीच–बीच में कुछ इस प्रकार (अधोलिखित प्रकार) से प्रश्न पूछकर बच्चों की सहभागिता बनाए रखे जाने का सकारात्मक प्रयास करते रहना चाहिए एवं प्रमुख बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखते रहना चाहिए।

1. 'बावरची' शब्द का क्या अर्थ होता है?

2. खानसामों किसके लिए प्रयोग किया गया है?
3. 'बावरची' एवं 'खानसामों' किस भाषा के शब्द है?
4. सड़के जवान हो गयी ऐसा क्यों कहा गया है?
5. पूरी मूर्ति के बजाय 'नाक' ही क्यों गायब की गई या तोड़ दी गई?
6. 'बच्चों की नाक भी लाट की नाक से बड़ी' होने का क्या तात्पर्य है?
7. पत्थर की तलाश सर्वप्रथम किस प्रकार की गई?

कार्य प्रपत्र –

(कार्यशाला प्रतिभागी शिक्षकों के लिए)

1. पाठ मे उर्दू अरबी के शब्द छांटकर लिखे एवं उनके अर्थ भी बताएं।
2. रानी एलिजाबेथ की तैयारियों में अखबारों में प्रमुख रूप में किन–किन बातों की चर्चा होती रहीं? सबसे महत्वपूर्ण बात आपको क्या लगी?
3. भारत वर्ष के सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की किस–किस चारित्रिक विशेषताओं पर लेखक ने व्यंग्य किया है? स्पष्ट करें।
4. 'शंख इंग्लैंड में बज रहा था, गूंज हिन्दुस्तान में आ रही थी' का तात्पर्य स्पष्ट करें।
5. आपके अपने मतानुसार मूर्तिकार बार–बार बिना पत्थर प्राप्त किए खाली हाथ वापस क्यों आता रहा
6. मूर्तिकार के हरेक प्रस्ताव को सभा की मंजूरी मिलने की समीक्षा अपने शब्दों में करें।
7. जार्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

मूल्यपरक शिक्षा –

1. व्यक्तिगत स्वार्थ से उठकर 'राष्ट्रहित' में सोचना चाहिए।
2. देश की अस्मिता सर्वोच्च स्थान रखती है।
3. किसी भी स्थिति में 'अपनों' एवं 'देश के स्वाभिमान' पर आंच नहीं आने देना चाहिए।
4. किसी भी देश या देश के शासनाध्यक्ष का भरपूर स्वागत करें, परंतु यदि हम अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को ऊपर रखकर करें तभी कोई भी अन्य देश हमें सम्मान देगा।
5. 'खुशामद' व 'चापलूसी' की मानसिकता एक गंदी मानसिकता का द्योतक है।

वाक्य एवं वाक्य-भेद

(रचना के आधार पर)

वाक्य – एक परिचय :

दो या अधिक सार्थक शब्दों का ऐसा समूह जो व्याकरण सम्मत, अर्थपूर्ण समाज स्वीकृत एवं सुव्यवस्थित हो, वाक्य कहलाता है। जैसे – 'किसान आग से खेत सींचता है।' यह वाक्य व्याकरण सम्मत एवं सुव्यवस्थित है परंतु समाज स्वीकृत अर्थ प्रदान नहीं करता। अतः यह शुद्ध वाक्य नहीं कहलाएगा। अपितु शुद्ध वाक्य 'किसान पानी से खेत सींचता है।'

वाक्य के घटक –

एक सार्थक वाक्य की रचना जिन अवयवों के संयोग से (मिलाकर) होती है, उसे वाक्य के घटक कहते हैं। वाक्य के लिए मूल एवं अनिवार्य घटक लेते है। कर्ता एवं क्रिया। क्योंकि इनके बिना वाक्य की रचना संभव नहीं। इस प्रकार सबसे संक्षिप्त वाक्य की रचना मात्र इन दोनों के संयोग से की जा सकती है। जैसे –

1. तुम जाओ।
2. सीता गाएगी।
3. आप पढ़े आदि।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य आवश्यक घटक भी होते हैं। जैसे – विशेषण, क्रिया विशेषण, कारक आदि। परंतु ये आवश्यकतानुसार आते हैं। अतः इन्हें ऐच्छिक घटक कहते हैं।

वाक्य के प्रमुख अंग (पक्ष)

कर्ता और क्रिया पक्ष के अनुसार वाक्य के दो अंग माने गए हैं।

1. उद्‌देश्य   2. विधेय

1. **उद्‌देश्य** – वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए वह उद्‌देश्य कहलाता है। इसके अंतर्गत कर्ता एवं कर्ता विस्तार आते है। जैसे मोहन ने गीत गाया। इस वाक्य में 'मोहन' उद्‌देश्य है।

2. **विधेय** – उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं इसके अंतर्गत क्रिया, कर्म तथा उसके विस्तार आदि आते हैं। जैसे हमारी टीम का सबसे अच्छा खिलाड़ी इस बार प्रतियोगिता में भाग लेगा।

उपरोक्त वाक्य में 'हमारी टीम का सबसे अच्छा खिलाड़ी' उद्देश्य हुआ तथा शेष भाग विधेय कहलाएगा।

रचना की दृष्टि से वाक्य–भेद

रचना की दृष्टि से वाक्य की तीन भेद किए गए है।

1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य

1. **सरल वाक्य** – जिन वाक्यों में सामान्यतया एक ही मुख्य क्रिया होती है, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं। जैसे – बालक पढ़ता है। बच्चे खेल रहे हैं। मैं बाजार से होता हुआ घर आऊँगा आदि।

   उपर्युक्त तीनों वाक्यों में वाक्य छोटें हों या बड़े एक ही मुख्य क्रिया आयी है। अतः ये सरल वाक्य के उदाहरण है।

   इस प्रकार हम कह सकते है कि साधारण वाक्य में मुख्यतः एक उद्देश्य होता है और एक ही विधेय अर्थात इसमें एक ही प्रधान क्रिया होती है।,

2. **संयुक्त वाक्य** – जहाँ दो या दो से अधिक वाक्य या उपवाक्य मिलकर (स्वतंत्र उपवाक्य) किसी योजक के सहयोग से एक वाक्य का निर्माण करते हैं तब वहाँ वाक्य संयुक्त वाक्य कहलाता है। जैसे –

   i) बरसात बंद हुई और तारे निकल आए।

   ii) मैंने बहुत प्रयास किया परंतु समय पर न पहुंच सका।

   iii) बरसात आ गयी अन्यथा मैं मैच जीत जाता।

   iv) मैं स्कूल जाऊँगा या शादी में जाऊँगा।

   v) मुझे सुबह जल्दी जाना है इसलिए मैं जल्दी सोऊँगा।

3. **मिश्र वाक्य** – जिन वाक्यों की रचना दो या अधिक उपवाक्यों से होती है। जिनमें एक प्रधान तथा एक आश्रित उपवाक्य होता है, उन्हें मिश्र वाक्य कहते हैं। जैसे –

   i) मौसम विभाग ने बताया कि कल तेज तूफान आएगा।

   ii) जो व्यक्ति चौराहे पर खड़ा है वह मेरा मित्र है।

   उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित उपवाक्य प्रधान तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य की पहचान –

1. आश्रित उपवाक्यों के आंरभ में 'कि', 'जो', 'जिसे', 'जितना', 'जिधर', 'यदि', 'क्योंकि' आदि लगे होते हैं।

2. मिश्र वाक्य को सरल वाक्य में परिवर्तित करने पर जो क्रिया अपने पूर्ववत रूप में रहती है, वह उपवाक्य प्रधान तथा जिस उपवाक्य की क्रिया का स्वरूप परिवर्तित हो जाता है, वह उपवाक्य आश्रित उपवाक्य होता है।

आश्रित उपवाक्य के भेद –

1. संज्ञा आश्रित उपवाक्य
2. विशेषण आश्रित उपवाक्य
3. क्रिया–विशेषण आश्रित उपवाक्य

1. **संज्ञा आश्रित उपवाक्य** – जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के स्थान पर प्रयुक्त हुआ हो, उसे संज्ञा आश्रित उपवाक्य कहते हैं। संज्ञा आश्रित उपवाक्य के पूर्व 'कि' या तो जुड़ा होता है या होने की संभावना पायी जाती है। जैसे – राम ने कहा कि कल वह स्कूल जाएगा।

   रेखांकित उपवाक्य संज्ञा आश्रित उपवाक्य है।

2. **विशेषण आश्रित उपवाक्य** – जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं उसे विशेषण आश्रित उपवाक्य कहते हैं। जैसे – जो छात्र परिश्रम करता है, वही परीक्षा में पास होता है। यह वहीं व्यक्ति है जिसने कल मदद की थी।

   पहचान – विशेषण आश्रित उपवाक्य का प्रारंभ 'जो' सर्वनाम शब्द से या इसके किसी अन्य रूप से (जिसने, जिसे, जिनका, जिनकी, जिनको, जिन्हें, जिन्होंने आदि)

होता है।

3. **क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य** – जिस आश्रित उपवाक्य का प्रयोग क्रिया–विशेषण की भांति किया जाता है अर्थात जो उपवाक्य क्रिया की विशेषता बताते हैं वे क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य कहलाते है। जैसे –

जैसे ही मैं घर पहुंचा, वर्षा शुरू हो गयी।

जितना परिश्रम करोगे उतनी सफलता मिलेगी।

रेखांकित उपवाक्य क्रिया–विशेषण आश्रित उपवाक्य हैं क्योंकि ये उपवाक्य वाक्य की मुख्य क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य के भेद –

1. काल सूचक क्रिया–विशेषण आश्रित उपवाक्य – इस प्रकार के उपवाक्य का प्रारंभ 'ज्यों ही', 'जैसे ही', 'जब' आदि काल सूचक क्रिया विशेषण शब्दों से होता है। जैसे –

    1. ज्यों ही मैं स्टेशन पहुंचा, गाड़ी छूट गयी।
    2. जब मैं घर पहुंचा वर्षा हो रही थी।

2. **स्थान वाचक क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य** – इस प्रकार के आश्रित उपवाक्य 'जहाँ', 'जिधर', 'जिस जगह' स्थानवाचक शब्दों से होता है। जैसे

    1. जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ–वहाँ तुम चले आते हो।
    2. जिधर मेरा विद्यालय है वहीं खले का मैदान भी है।

3. **रीति वाचक आश्रित उपवाक्य** – रीति शब्द का अर्थ होता है ढंग या तरीका। इस प्रकार के उपवाक्य का प्रारंभ 'जैसा', 'जिस तरह', 'जैसे' आदि क्रिया विशेषण शब्दों से होता है। उदाहरणार्थ –

    जैसे आप करेंगे वैसे बच्चे सीखेंगे।

    जिस तरह तुम काम करते हो उसका यही परिणाम है।

4. **परिमाण वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य** – इस वाक्य का उपवाक्य 'यदि', 'यद्यपि', 'ताकि' आदि क्रिया विशेषण शब्दों से प्रारंभ होता है। जैसे –

    1. यदि परिश्रम करोगे तो पास हो जाओगे।

2. वह इसलिए गाएगा ताकि उसका चयन प्रतियोगिता में हो जाए।

3. यद्यपि उसने बहुत परिश्रम किया तथापि अंक प्राप्त न कर सका।

गतिविधियाँ एवं आकलन –

1. छात्रों के समक्ष कुछ मिले–जुले वाक्य अथवा एक उदाहरण प्रस्तुत कर उसमें से सरल, संस्कृत एवं मिश्र वाक्य छांटने के लिए प्रेरित करेंगे तथा कुछ नये वाक्यों का निर्माण करने की प्रेरणा देंगे।

2. सरल वाक्य से संयुक्त एवं मिश्रित वाक्य तथा संयुक्त एवं मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तित करने हेतु कुछ वाक्य प्रस्तुत करेंगे।

कार्य प्रपत्र –

अधोलिखित प्रश्नों को निर्देशानुसार हल कीजिए –

1. वाक्य के प्रकार बताओ –

    क) कठोर होकर भी सहृदय होना।

    ख) रात को आकाश में तारों का मेला लग गया।

    ग) मजदूर परिश्रम करता है लेकिन उसका लाभ उसे नहीं मिलता।

    घ) जो लोग स्वावलंबी होते हैं वे सदा सुखी रहते हैं।

2. आश्रित उपवाक्य छांटकर उसका भेद लिखिए –

    क) मैंने एक व्यक्ति देखा जो बहुत लंबा था।

    ख) अध्यापक चाहता है कि उनके शिष्य अच्छे बने।

    ग) तुम वहाँ चले जाओ जहाँ गाड़ी रूकती है।

3. क) विभिन्न वाक्यों की पहचान बताते हुए उदाहरण भी प्रस्तुत करो।

    ख) क्रिया–विशेषण आश्रित के भेदोपभेद बताते हुए उनकी पहचान बताएं।

    ग) संयुक्त व मिश्र वाक्य को सरल वाक्य में परिवर्तित करने के नियम समझाएं।

    घ) मिश्र वाक्य को सरल वाक्य में बदलकर प्रधान–वाक्य पहचानने का नियम समझाएं तथा उदाहरण प्रस्तुत करें।

पद परिचय

वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहे जाते हैं। इन शब्दों का व्याकरणिक परिचय ही पद–परिचय कहलाता है। पद परिचय बताने के लिए शब्दों के भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि का परिचय देना अनिवार्य होता है।

पद परिचय के लिए अध्यापकों एवं छात्रों हेतु आवश्यक संकेत/निर्देश

1. संज्ञा – संज्ञा के भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध
2. सर्वनाम – सर्वनाम के भेद, पुरूष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध
3. विशेषण – विशेषण के भेद, लिंग, वचन, विशेष्य का चयन
4. क्रिया – क्रिया का भेद (अकर्मक–सकर्मक), लिंग, वचन, पुरूष, धातु, काल, वाच्य, प्रयोगकर्ता और कर्म का संकेत
5. क्रिया विशेषण – क्रिया विशेषण के भेद जिस क्रिया की विशेषता बताई जा रही है उसका संकेत
6. समुच्चयबोधक – भेद (संयोजक–विकल्प) किन पदों या वाक्यों को मिला रहा है उसका संकेत
7. संबंधबोधक – भेद, जिससे संबंध दर्शाया गया हो उसका संकेत
8. विस्मयादिबोधक – भाव (विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, भय, क्रोध आदि) का निर्देश

- अध्यापक इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि कक्षा में परिभाषा से उदाहरण की ओर न जाया जाए बल्कि उदाहरण से परिभाषा की ओर आना शिक्षण प्रक्रिया और अधिगम को सुरूचिकर और प्रभावशाली बनाता है।

- पद परिचय से संबंधित कुछ उदाहरण –

1. कर्त्तव्य का पालन मनुष्य का धर्म है।

कर्त्तव्य का – भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक, संबंधी शब्द 'पालन'

मनुष्य – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक

2. परिश्रम के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता

परिश्रम – भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एक वचन, करण कारक

के बिना – संबंधबोधक अव्यय

ज्ञान – भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक

नहीं – रीतिवाचक क्रिया विशेषण (निषेधात्मक) प्राप्त होना क्रिया की विशेषता

प्राप्त होता – अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमान काल

3. कल हमने कुतुबमीनार देखा।

कल – कालवाचक क्रिया विशेषण, देखा क्रिया का काल बता रहा है।

कुतुब मीनार – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक

4. अरे ! तुम बाग में गए िा।

अरे ! अव्यय, विस्मयादिबोधक (आश्चर्यमूलक)

तुम – मध्यमपुरूष वाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, जाना क्रिया का कर्ता

बाग में – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक

गए – अकर्मक क्रिया, 'जा' धातु, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल

नोट – अध्यापक ध्यान दें कि प्रयोग की विशिष्टता के कारण पद–परिचय में भिन्नता आ जाती है। कुछ उदाहरणों से छात्रों को समझाएं।

1. अच्छा – संज्ञा – अच्छों के साथ रहो।

विशेषण – अच्छा आदमी सम्मान पाता है।

क्रिया विशेषण – आज तुम अच्छा खेले।

विस्मयादिबोधक – अच्छा! तो आज वह नहीं आएगा।

2. बहुत – संज्ञा – मैंने बहुतों को सबक सिखाया है।

सर्वनाम – बहुत हो चुका, अब बस भी कीजिए।

विशेषण – आज मैंने बहुत आम तोड़े।

क्रिया विशेषण – वह बहुत देर से बैठा हुआ है।

आकलन –

निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद परिचय दीजिए –

1. बालगोबिन भगत की वेशभूषा साधुओं जैसी थी।
2. नवाब साहब ने लखनऊ स्टेशन पर खीरे खरीदे।
3. उन्हें शहनाई पर भारत रत्न पुरस्कार मिला।
4. वह माता के आंचल में छुप जाता है।
5. भारत ने क्रिकेट मैच जीत लिया।
6. प्रत्येक देश का इतिहास मुझे पता है।
7. वाह! हम कितने सुंदर देश में आए हैं।

गतिविधियाँ /क्रियाकलाप –

1. कक्षा में जाने से पूर्व लगभग 8 बॉक्स तैयार करें। प्रत्येक बॉक्स पर क्रमशः संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक लिख दें। अब कक्षा को आठ समूहों में बांटकर प्रत्येक बॉक्स एक–एक समूह में रख दें। श्यामपट्ट पर तीन या चार वाक्य लिखें और कक्षा के छात्रों को निर्देश दें कि प्रत्येक वाक्य से प्रत्यके छात्र एक–एक शब्द का चयन करेगा और उस शब्द का चिट बनाकर उसके पीछे अपना नाम लिखेगा। इसके उपरांत शिक्षक प्रत्येक छात्र को अपने चिट पर लिखे शब्द की व्याकरणिक कोटि पहचान कर उचित समूह के पास रखे हुए बॉक्स मे डालेगा। अंत में अध्यापक इस तथ्य का आकलन कर सकेगा कि छात्रों में पद–परिचय की अवधारणा समझ में आई अथवा नहीं।

2. कक्षा को इसी प्रकार आठ समूहों बांटकर उन्हें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि नाम दिए जाएं। अध्यापक श्यामपट्ट पर 8 से 10 वाक्य लिखकर उन पदों को रेखांकित कर दे जिनका परिचय दिया जाता है। अब प्रत्येक समूह को कहा जाए कि अपने समूह की विशेषताओं के आधार पर

उपयुक्त शब्दों का चयन करें। अंत में अध्यापक इस बात का आकलन करे कि किस समूह ने सही रूप से सर्वाधिक शब्दों का चयन अपने समूह की विशेषता के आधार पर किया है।

3. अध्यापक कक्षा में श्यामपट्ट पर 8 या 10 वाक्यों को लिखकर पदों को रेखांकित करेगा। अब प्रत्येक मेज से दो छात्रों को खड़ा कर एक छात्र से उसकी व्याकरणिक कोटि पूछेगा तथा उसकी साथी उस व्याकरणिक कोटि का भेद बताएगा।

4. छात्रों से चार्ट पेपर पर प्रत्येक व्याकरणिक कोटि और उसके भेदों का वृक्ष चित्र बनवाया जा सकता है।

इन उपरोक्त गतिविधियों के अतिरिक्त अध्यापक छात्रों की रूचि, स्तर एवं उपलब्ध साधनों आदि को देखते हुए अन्य रोचक गतिविधियों का निर्माण कर सकते हैं। दृश्य–श्रव्य माध्यमों का भी उचित प्रयोग किया जा सकता है।

कार्य प्रपत्र –

1. शब्द और पद में क्या अंतर है?

....

....

2. वाक्यों में रेखांकित पदों का पद परिचय दीजिए –

क) <u>छोटी बच्ची</u> हंस रही है।

ख) ऐसा भी <u>क्या</u> हो सकता है?

ग) लड़की <u>सुशील</u> है।

घ) भारत <u>महान</u> देश है।

ङ) परिश्रम से ही <u>सफलता</u> मिलती है।

च) मैं <u>धीरे–धीरे</u> चलता हूँ।

छ) <u>यह</u> किताब मेरी है।

ज) <u>समय पर</u> काम करना चाहिए।

3. निम्नलिखित व्याकरणिक कोटियों को उनके भेदों के साथ सुमेलित करें –

	व्याकरणिक कोटि	**भेद**
क)	संज्ञा	सकर्मक
ख)	सर्वनाम	सार्वनामिक
ग)	विशेषण	निश्चयवाचक
घ)	क्रिया विशेषण	संबंध
ङ)	कारक	जातिवाचक
च)	क्रिया	रीतिवाचक

4. निम्नलिखित शब्दों को उनके व्याकरणिक कोटियों के साथ सुमेलित करें –

क)	**शब्द**	**व्याकरणिक कोटि**
ख)	सुंदर	निपात
ग)	धीरे–धीरे	संबंधबोधक अव्यय
घ)	तो	रीतिवाचक क्रिया विशेषण
ङ)	वाह!	गुणवाचक विशेषण
च)	के बिना	विस्मयादिबोधक अव्यय

अधिगम प्रतिफल –

1. छात्र शब्द और पद के अंतर को जानते हैं।
2. वे पद–परिचय बताने के लिए शब्दों के भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि का परिचय देते हैं।
3. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण आदि के भेदों के बारे में जानते हैं।
4. वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक पद का पद–परिचय देते हैं।

रस परिचय

मानव जीवन में दुःख और सुख समय–समय पर पीड़ा और आनन्द की अनुभूति कराते रहते हैं। हम दैनिक जीवन में मिलना और बिछड़ना, प्रेम, घृणा, क्रोध, भय आदि का अनुभव करते रहते है। इस प्रकार 'रस' शब्द मानव के जीवन से संबंद्ध है। काव्य पढ़ने–सुनने अथवा नाटक देखने से पाठक, श्रोता या दर्शकों को जो आनंद प्राप्त होता है, उसे 'रस' कहते हैं। विद्वान सरस अभिव्यक्ति को ही रस कहते हैं। रस को काव्य की आत्मा भी कहा गया है।

पाठक, श्रोता या दर्शक के चित में स्थित स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव और संचारी भाव (व्याभिचारी) से संयोग ही 'रस' कहलाता है।

रस के अंग (अवयव) :

1. स्थायी भाव
2. विभाव
3. अनुभाव
4. संचारी भाव

1. **स्थायी भाव** – भाव वस्तुतः मन के विकारों को कहा जाता है। मानव हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं जैसे रति, शोक, क्रोध, हास, उत्साह, घृणा, भय, विस्मय और वैराग्य आदि। ये मन में सुप्त अवस्था में रहते हैं और अनुकूल परिस्थितियों में जागृत हो जाते हैं।

   स्थायी भाव और रस दोनों अंतः प्रक्रिया से जुड़े होते हैं प्रमुख रस नौ हैं जबकि वात्सल्य और भक्ति को स्वीकार करने के पश्चात् ग्यारह हो जाते हैं।

रस स्थायी भाव – संचारी सारणी

क्रम सं	रस	स्थायी भाव	संचारी भाव
1	श्रृंगार	रति	हर्ष, उन्माद, मद, आवेग, मोह, स्मृति, लज्जा, उत्सुकता
2	करूण	शोक	मोह, ग्लानि, स्मृति, दैय, चिंता, विषाद, उन्माद
3	रौद	क्रोध	उग्रता, गर्व, श्रम, आवेग, चपलता, अमर्ष
4	हास्य	हास	चपलता, उत्सुकता, मति, हर्ष
5	वीर	उत्साह	गर्व, हर्ष, आवेग, रोमांच
6	वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)	चिंता, जड़ता, उन्माद, आवेग, मोह, निर्वेद
7	भयानक	भय	चिंता, शंका, दैन्य, त्रास, ग्लानि
8	अद्भुत	विस्मय	हर्ष, वितर्क, भ्रांति, चपलता, आवेग, औत्सुक्य
9	शांत	वैराग्य	हर्ष दैन्य, ग्लानि, धृति
10	वात्सल्य	वत्सल	हर्ष, मोह, आवेग, औत्सुक्य
11	भक्ति	भगवद्रति	हर्ष, मद, उन्माद, स्मृति लज्जा

2. **विभाव** – मानव मन में जो वस्तु या परिस्थिति भाव को जगाने का कारण होती है उसे विभाव कहते हैं। इसके दो भेद है – आलंबन विभाव, उद्दीपन विभाव

   1. **आलंबन विभाव** – जिस व्यक्ति या वस्तु का सहारा पाकर 'रति' आदि भाव जागृत होते हैं, उसे आलंबन विभाव कहते हैं। इसके दो भेद हैं। क) आश्रय ख) विषय

      क) आश्रय – जिसके हृदय में स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं

      ख) विषय – जिसके प्रति आश्रय के मन में स्थायी भाव जागते हैं।

   2. **उद्दीपन विभाव** – जो तत्व आश्रय के मन में जागृत स्थायी भाव को उद्दीप्त करते हैं, उद्दीपन विभाव कहलाते हैं। इसके दो भेद है।

      क) विषय की बाह्य चेष्टाएं

      ख) बाह्य वातावरण

3. **अनुभाव** – आलंबन और उद्दीपन के योग से आश्रय के मन में भाव के अनुसार जो

विभिन्न चेष्टाएं होती हैं, अनुभाव कहलाती है। अर्थात् आश्रय की चेष्टाओं या प्रतिक्रिया को अनुभाव कहते हैं इसके कायिक और सात्विक दो भेद है।

क) कायिक अनुभाव – संकेत करना, हाथ पटकना आदि चेष्टाएं

ख) सात्विक अनुभाव – भय, क्रोध, दुःख, श्रम में पसीना आना, रोंगटे खड़े होना, पीला पड़ना, चेतना गुम होना आदि।

4. **संचारी भाव (व्याभिचारी भाव)** – संचारी का अर्थ है साथ–साथ संचरण करने वाला और व्यभिचारी अर्थात् एक से अधिक स्थायी भाव के साथ संचरण (रमण) करने वाला। मनुष्य के हृदय में स्थित स्थायी भाव के साथ उत्पन्न होने वाले क्षणिक मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। भरत मुनि द्वारा संचारी भावों की संख्या 33 मानी गई है। जो निम्नलिखित तालिका में स्पष्ट है।

संचारी भाव तालिका

निर्वेद	आवेग	भय	जड़ता	उग्रता	मोह	विवोध	अपस्मार
दैन्य	श्रम	गर्व	मरण	अलसता	अमर्ष	निद्रा	अवहित्था
मद	स्वप्न	औत्सुक्य	उन्माद	शंका	स्मृति	मति	व्याधि
लज्जा	हर्ष	असूया	विषाद	धृति	चपलता	ग्लानि	चिंता
आवेग							

उदाहरण :

1. श्रृंगार रस – विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से परिपुष्ट 'रति' स्थायी भाव 'श्रृंगार' रस कहलाता है। इसके दो भेद है।

   क) संयोग ख) वियोग

2. करूण रस – प्रिय व्यक्ति अथवा वस्तु के नष्ट होने पर 'शोक' स्थायी भाव जागृत होता है। शोक स्थायी भाव का विभाव अनुभाव संचारी भाव से संयोग ही 'करूण रस' होता है।

   विशेष कथन – उपर्युक्त नियमानुसार अन्य सभी रस स्थायी भाव अनुसार विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से निर्मित होते हैं।

- **अध्यापक उदाहरणों के माध्यम से इसी प्रकार अन्य रसों की परिभाषाएँ बताएँ एवं उनके स्थायी भाव को आत्मसात् करवाएँ।**

आकलन –

प्रश्नों द्वारा अभ्यास करने के पश्चात् यह आकलन आवश्यक है कि छात्रों को मन के भावों को पहचान कर रस के स्थायी भाव और संचारी भाव का ज्ञान हुआ अथवा नहीं। इसी क्रम प्रश्न किए जाएं। जैसे –

1. स्थायी भाव किसे कहते हैं?
2. उत्साह किस रस का स्थायी भाव है?
3. विभाव किसे कहते है?
4. विभाव के कितने भेद हैं?
5. आलंबन विभाव किसे कहते हैं?
6. उद्दीपन विभाव की क्या पहचान है?
7. अनुभाव किस कहते है?
8. संचारी भाव को व्याभिचारी भाव क्यों कहा जाता है?
9. संचारी भाव किन्हें कहा जाता है?
10. संचारी भाव कितने है?
11. रस किसे कहते हैं?
12. श्रृंगार रस का स्थायी भाव क्या है?
13. करूण रस की क्या परिभाषा है?
14. वीर रस का उदाहरण दीजिए।
15. हंसी किस रस का स्थायी भाव है?

अधिगम प्रतिफल –

- छात्रों के आकलन पश्चात् पाया जाता है कि छात्रों में मन के भावों को पहचान करना आसान हो गया।
- रस तथा रसों के भेद तथा उनके उदाहरण छात्र समझ जाते हैं।

- छात्रों में समूह भावना का विकास होता है।
- छात्र जीवन में रसों के महत्व का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

कार्य प्रपत्र –

1. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर रिक्त स्थान में रस का नाम स्थायी भाव, विभाव (आलंबन–उद्दीपन) अनुभाव और संचारी लिखिए –

   तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान

   मृतक में भी डाल देगी जान

   धूलि धूसर तुम्हारे ये गात.......

   छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

   ....

   ....

2. वीर रस से परिपूर्ण कविता की चार पंक्तियां लिखिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

3. अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही

   अब इन जोग संदेशनि, सुनि–सुनि, विरहिनी विरह दही।

   उपर्युक्त काव्यांश में प्रयुक्त रस का नाम तथा उसके स्थायी भाव का नाम लिखिए।

   ....

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन शब्द दो शब्दों वि+ज्ञापन से बना है। वि का अर्थ है विशेष तथा ज्ञापन का अर्थ होता है सार्वजनिक सूचना। इस प्रकार विज्ञापन का अर्थ हुआ विशेष सार्वजनिक सूचना। विज्ञापन वह माध्यम है जिससे ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित कर हम वस्तुएं बेच सकते हैं अथवा किसी आयोजन/प्रयोजन आदि की जानकारी सरलता से पहुंचा सकते हैं।

किसी भी विज्ञापन के निम्नलिखित भाग होते है –

1. शीर्षक
2. उपशीर्षक
3. विषय विस्तार
4. उपसंहार

उदाहरण के लिए देखे –

स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से स्वच्छता के प्रति सचेत करते हुए विज्ञापन लिखिए –

विज्ञापन लेखन हेतु अध्यापकों को आवश्यक निर्देश –

कक्षा में छात्रों को विज्ञापन लेखन के समय इन महत्वपूर्ण बातों का अवश्य ध्यान दिलाएं –

क) जिस वस्तु का विज्ञापन किया गया है, उसका नाम एक से अधिक बार आना चाहिए।

ख) लिखावट आकर्षक होना चाहिए।

ग) आकर्षक चित्रों का प्रयोग करना चाहिए।

घ) विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख जरूर होना चाहिए।

ङ) विज्ञापन प्रस्तुति में नयापन, वर्तमान से जुड़ाव और दूसरे विज्ञापनों से भिन्नता होनी चाहिए।

च) विज्ञापनों में विज्ञापित वस्तु के मिलने का पता, उस पर मिलने वाली छूट आदि अवश्य शामिल होने चाहिए।

छ) आयोजन वाले विज्ञापनों में आयोजन स्थल का नाम, तिथि और समय का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना चाहिए।

ज) विज्ञापन संक्षिप्त और आकर्षक होने चाहिए।

गतिविधियाँ / क्रियाकलाप

1. कक्षा को समूहों में बांटकर प्रत्येक समूह को किसी एक वस्तु का चित्र दिखाकर विज्ञापन तैयार करने को कहा जा सकता है। सर्वश्रेष्ठ विज्ञापन को कक्षा में प्रदर्शित किया जा सकता है।
2. छात्रों को चार समूहों में बांटकर उन्हें शीर्षक, उपशीर्षक, विषय–विस्तार, उपसंहार नाम दिए जाएं। अध्यापक किसी भी एक विज्ञापित वस्तु को दिखाकर प्रत्येक समूह को उनके नाम के अनुरूप लेखन करने को कहेगा। फिर चारों समूहों के सहयोग से अध्यापक विज्ञापन का निर्माण करवा सकता है।
3. अध्यापक कक्षा में छात्रों से विविध वस्तुओं से संबंधित चित्र बनाने के लिए कह सकता है।
4. अध्यापक कक्षा में छात्रों से स्लोगन लेखन (नारा लेखन) प्रतियोगिता भी करवा सकता है।

आकलन –

1. 'दंतज्योति' टूथपेस्ट पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

2. 'विद्यालय में आयोजित होने वाले बाल–मेला' से संबंधित एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

3. 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

4. जल संरक्षण के महत्व पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

5. 'यातायात नियमों की अवहेलना करने वालों' पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

6. 'स्कूल बैग' से संबंधित एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

7. स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

8. घर का पुराना सामान बेचने हेतु एक विज्ञापन तैयार करें।

9. साइकिल दौड़ प्रतियोगिता पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

10. 'स्मार्ट मोबाइल' के लिए एक विज्ञापन बनाइए।

कार्य प्रपत्र –

1. निम्नलिखित विज्ञापन में से शीर्षक, उपशीर्षक, विषय विस्तार और उपसंहार को छांटिए –

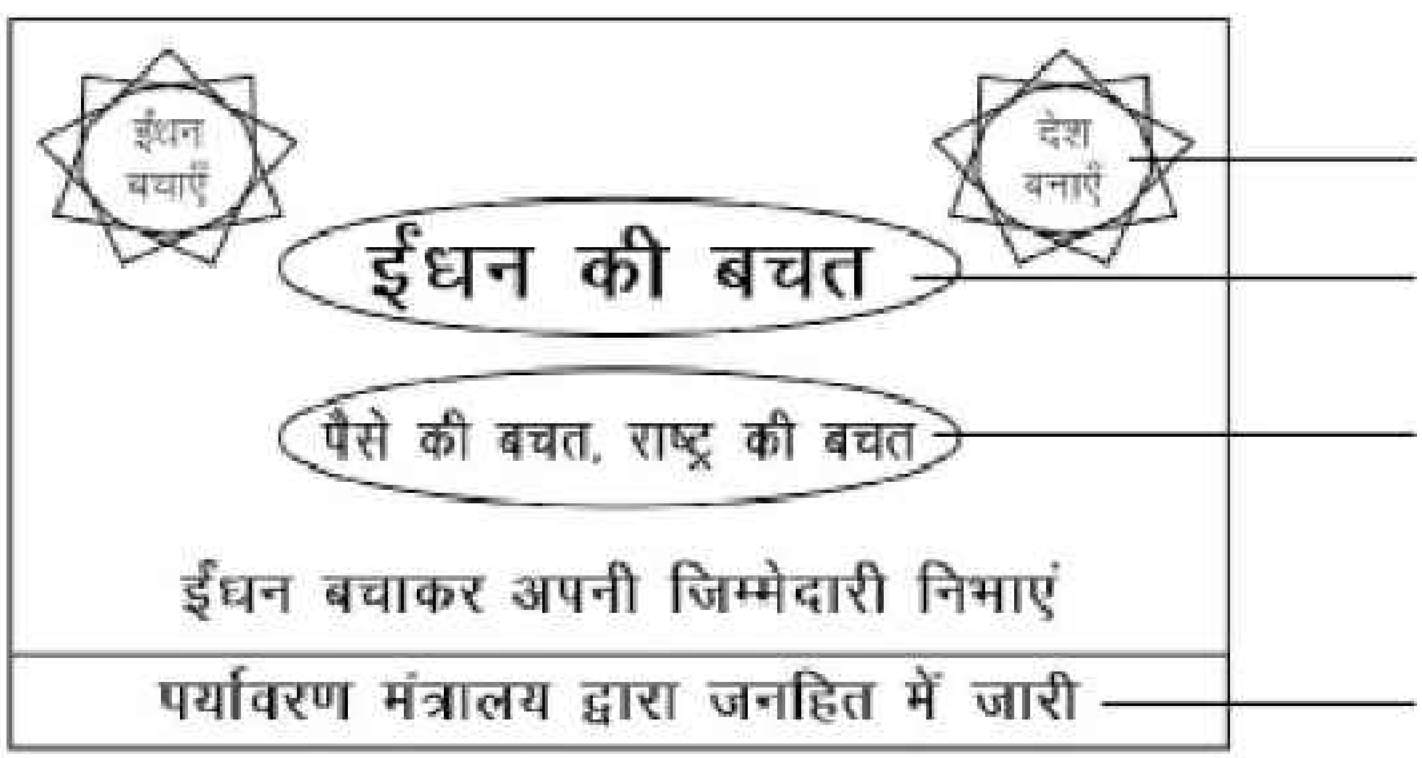

2. निम्नलिखित स्लोगन को पूरा करे –

क) देश महान, ...

ख) स्वच्छता अभियान, ...

ग) बालिका शिक्षा, ...

घ) मेरी साइकिल, ...

ङ) मेरा बस्ता, ...

3. निम्नलिखित वस्तुओं के लिए स्लोगन निर्माण करें –

क) नटखट पैंसिल

ख) मोहन मिठाई भंडार

ग) राधा वस्त्रालय

घ) पर्यावरण संरक्षण

ङ) जनसंख्या वृद्धि

अधिगम प्रतिफल –

1. विज्ञापन विधा के बारे में जानते हैं।
2. विज्ञापन का निर्माण करते हैं।
3. विज्ञापनों के लिए स्लोगन लिखते हैं।
4. विज्ञापनों के लिए आकर्षक सचित्र प्रस्तुति करते हैं।